सेवा समर्पण

मूल्य ₹ 20

वर्ष-42, अंक-01, कुल पृष्ठ-36, आश्विन-कार्तिक, विक्रम सम्वत् 2081, अक्टूबर, 2024

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्थापना दिवस (विजयादशमी, 1925) पर विशेष

देश सेवा के 99 वर्ष

प्रतिनिधि सभा, मार्च 2024 के अनुसार संघ की 922 जिलों, 6597 खंडों और 27,720 मंडलों में 73,117 दैनिक शाखाएँ, प्रत्येक मंडल में 12 से 15 गाँव शामिल हैं।

शिक्षक दिवस

केशव पुरम विभाग में सेवा भारती द्वारा संचालित सभी सेवा केन्द्र पर शिक्षक दिवस बहुत ही सुन्दर तरीके से मनाया गया। केन्द्रों में सेवित जन बच्चों ने एक दिन के लिए शिक्षिका दीदी की जगह कार्यभार बखूबी संभाला। शिक्षिकाओं द्वारा बच्चों को गुरु की महिमा के बारे में विधिवत बताया गया। कार्यक्रम में विभाग, जिला नगर के कार्यकर्ताओं ने भाग लेकर उत्साहवर्धन किया। ❐

दयाबस्ती में नया केंद्र

दयाबस्ती सेवा केन्द्र सेवा भारती, जिला मोती नगर, केशव पुरम विभाग में बालवाड़ी व सामाजिक प्रकल्प को दूसरी जगह नाग मंदिर में हनुमान चालीसा, राम-नाम कीर्तन के साथ शुरू किया गया। इसमें सेवा बस्ती की महिलाओं और बालवाड़ी के बच्चों ने भाग लिया। कार्यकारिणी जिला अध्यक्ष, मंत्री, महिला मंत्री, सहमंत्री साथ ही शिक्षिका एवं निरीक्षिकाओं ने भाग लिया। मन्दिर के पंडित जी द्वारा कार्य का शुभारम्भ किया गया। तत्पश्चात बैठक में विषय बिन्दु पर चर्चा हुई। ❐

निबंध प्रतियोगिता

अम्बेडकर जिला, रामकृष्णपुरम विभाग स्थित सेवा विद्यामन्दिर पर सुपोषित भारत विषयक चित्रकला प्रतियोगिता एवं निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित की गई। बच्चों ने विभिन्न तरह के चित्र बनाये, साथ ही निबन्ध प्रतियोगिता में भी हिस्सा लिया। ❐

संरक्षक
श्रीमती इन्दिरा मोहन

परामर्शदाता
डॉ. राम कुमार

सम्पादक
डॉ. शिवाली अग्रवाल

कार्यालय
सेवाकुंज, 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 23345014/15
E-mail: info@sewabhartidelhi.org
Website: www.sewabhartidelhi.org

पृष्ठ सज्जा
मणिशंकर कुमार

एक प्रति : 20/-रुपये
वार्षिक शुल्क : 200/-रुपये

सेवा समर्पण

वर्ष-42, अंक-01, कुल पृष्ठ-36, अक्टूबर, 2024

विषय - सूची

शीर्षक	लेखक	पृ.
देश सेवा के 99 वर्ष	प्रतिनिधि	4
आया त्योहारों का मेला	आचार्य मायाराम 'पतंग'	8
नैसर्गिक पवित्रता का पर्व नवरात्र	विद्यानिवास मिश्र	10
भारतीय संस्कृति में सेवा	बृजेश मिश्र	12
जज साहब का सत्याचरण	गंगा प्रसाद 'सुमन'	14
कविता : पितरों को नमन	मानवेन्द्र	14
नरेन्द्र मोदी के आदर्श : श्री लक्ष्मणराव इनामदार		15
कृष्ण बनिए, दुर्योधन नहीं	गंगा प्रसाद 'सुमन'	16
जब सुनी गई एक गरीब छात्र की पुकार	डॉ. शिवाली अग्रवाल	17
'संत ईश्वर सम्मान' से सम्मानित हुए 17 साधक	प्रतिनिधि	18
समता से मिलती है शक्ति	श्रीराम शर्मा आचार्य	19
भारतीय समाज में परिवर्तन	ऋषिता अग्रवाल	20
प्रेरक कहानी : हार मान कर मत बैठिए	अमित कुमार	22
समता के प्रेरणास्रोत	डॉ. शिवाली अग्रवाल	24
महारास का आध्यात्मिक रहस्य	आचार्य अनमोल	26
सेवा भारती की गतिविधियाँ		27

पाठकों से अनुरोध

सेवा समर्पण के सुधी पाठकों से अनुरोध है कि वे हर अंक में प्रकाशित लेखों और महापुरुषों के विचारों पर अपनी राय अवश्य भेजें।

पता : संपादक, सेवा समर्पण,
13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 23345014/15, E-mail: info@sewabhartidelhi.org

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्थापना दिवस (विजयादशमी, 1925) पर विशेष

देश सेवा के 99 वर्ष

■ प्रतिनिधि

आज जिस राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आर.एस.एस.) को विश्व के सबसे बड़े संगठन के रूप में जाना जाता है, उसकी नींव 1925 में विजयादशमी के दिन डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार ने रखी थी। डॉ. हेडगेवार ने जब संघ की स्थापना की, उनकी आयु 36 वर्ष थी। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का प्रादुर्भाव उस समय हुआ, जब अंग्रेजों की दासता में भारतीय संस्कृति का सर्वनाश हो रहा था। इससे व्यथित होकर डॉ. हेडगेवार ने संघ की स्थापना की। उनमें समाज सेवा तथा देशभक्ति कूट-कूटकर भरी थी। उन्होंने बाल्यावस्था में ही बालकों के साथ मिलकर सीतावर्डी के दुर्ग से अंग्रेज यूनियन जैक का झंडा उतारने के लिए सुरंग बनाने की योजना बना डाली थी। इससे उनकी राष्ट्रीय भावना का परिचय मिलता है। प्रतिनिधि सभा, मार्च 2024 के अनुसार संघ की 922 जिलों, 6597 खंडों और 27,720 मंडलों में 73,117 दैनिक शाखाएँ, प्रत्येक मंडल में 12 से 15 गाँव शामिल हैं। समाज के हर क्षेत्र में संघ की प्रेरणा से विभिन्न संगठन चल रहे हैं जो राष्ट्र निर्माण तथा हिंदू समाज को संगठित करने में अपना योगदान दे रहे हैं। संघ के विरोधियों ने तीन बार इस पर प्रतिबंध लगाया-1948,1975 एवं 1992 में। लेकिन तीनों बार संघ पहले से भी अधिक मजबूत होकर उभरा। संघ एक सामाजिक, सांस्कृतिक संगठन है।

संघ 'हिन्दू' शब्द की व्याख्या सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के संदर्भ में करता है जो किसी भी तरह से (पश्चिमी) धार्मिक अवधारणा के समान नहीं है। इसकी विचारधारा और मिशन का जीवंत संबंध स्वामी विवेकानंद, महर्षि अरविन्द, बाल गंगाधर तिलक और बी. सी. पाल जैसे हिंदू विचारकों के दर्शन से है। स्वामी विवेकानंद ने यह महसूस किया था कि "एक सही अर्थों में हिन्दू संगठन अत्यंत आवश्यक है जो हिंदुओं को परस्पर सहयोग और सराहना का भाव सिखाए।"

स्वामी विवेकानंद के इस विचार को डॉ. हेडगेवार ने व्यवहार में तब्दील कर दिया। उनका मानना था कि हिंदुओं को एक ऐसे कार्य-दर्शन की आवश्यकता है,

जो इतिहास और संस्कृति पर आधारित हो, जो उनके अतीत का हिस्सा हो और जिसके बारे में उन्हें कुछ जानकारी हो। संघ की शाखाएँ 'स्व' के भाव को परिशुद्ध कर एक बड़े सामाजिक और राष्ट्रीय-हित की भावना में मिला देती हैं।

वस्तुतः हम यह कह सकते हैं कि हिंदू राष्ट्र को स्वतंत्र करने व हिंदू समाज, हिंदू धर्म और हिंदू संस्कृति की रक्षा कर राष्ट्र को परम वैभव तक पहुँचाने के उद्देश्य से डॉक्टर साहब ने संघ की स्थापना की।

संघ कोई राजनीतिक दल नहीं है, अपितु एक सामाजिक संगठन है। इसकी कोई राजनीतिक महत्वाकांक्षा नहीं है, और न ही यह राजनीतिक परिणामों के लिए काम करता है, बल्कि राष्ट्रीय राजनीतिक जीवन पर इसका प्रभाव परिलक्षित होता है, तो भी यह राजनीति से दूर ही रहता है। इसकी शाखा पद्धति में जरूर ऐसे स्वयंसेवक तैयार हुए हैं, जो आज राजनीति में उच्च स्थानों पर हैं। संघ का साधारण सिद्धांत यह है कि संघ शाखा चलाने के सिवाय कुछ नहीं करेगा और स्वयंसेवक कोई कार्यक्षेत्र नहीं छोड़ेगा। स्वयंसेवक समाज के सभी क्षेत्रों यथा-शिक्षा, राजनीति, अर्थशास्त्र, सुरक्षा व संस्कृति इत्यादि क्षेत्रों में काम करते हैं।

संघ का एक ही ध्येय है- भारत को महान बनाना। संघ एक सशक्त हिंदू समाज के निर्माण के लिए सभी जाति के लोगों को एक करना चाहता है।

गांधी जी के एक प्रश्न पर डॉ. हेडगेवार लिखते हैं, "हिंदू-संस्कृति हिंदुस्थान का प्राण है। अतएव हिंदुस्थान का संरक्षण करना हो तो हिंदू-संस्कृति का संरक्षण करना हमारा पहला कर्त्तव्य हो जाता है। हिन्दुस्थान की हिंदू-संस्कृति ही नष्ट होने वाली हो तो, हिंदू समाज

प्रतिनिधि सभा, मार्च 2024 के अनुसार संघ की 922 जिलों, 6597 खंडों और 27,720 मंडलों में 73,117 दैनिक शाखाएँ, प्रत्येक मंडल में 12 से 15 गाँव शामिल हैं। समाज के हर क्षेत्र में संघ की प्रेरणा से विभिन्न संगठन चल रहे हैं जो राष्ट्र निर्माण तथा हिंदू समाज को संगठित करने में अपना योगदान दे रहे हैं।

का नामोनिशान हिंदुस्थान से मिटने वाला हो, तो फिर शेष जमीन के टुकड़े को हिंदुस्थान या हिंदू राष्ट्र कैसे कहा जा सकता है? क्योंकि राष्ट्र जमीन के टुकड़े का नाम तो नहीं है... यह बात एकदम सत्य है। फिर भी हिंदू-धर्म तथा हिंदू-संस्कृति की सुरक्षा एवं प्रतिदिन विधर्मियों द्वारा हिंदू समाज पर हो रहे विनाशकारी हमलों को कांग्रेस द्वारा दुर्लक्षित किया जा रहा है, इसलिए इस अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की आवश्यकता है। फिर भी यह संघ कांग्रेस का कदापि विरोधी नहीं है। हमारी राष्ट्रीय संस्कृति के मार्ग में बाधा न बनने वाले स्वतंत्रता प्राप्ति के कार्यक्रमों में संघ कांग्रेस के साथ सहयोग करेगा और आज तक करते आया भी है।"

भारत का स्वाधीनता संग्राम

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भारत के स्वाधीनता संग्राम में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही जिसे डॉ. साहब के अथक प्रयासों के संदर्भ में समझा जा सकता है। कलकत्ता (कोलकाता) में श्याम सुन्दर चक्रवर्ती और मौलवी लियाकत हुसैन से डॉ. जी की घनिष्ठ मित्रता रही। उनके स्वाधीनता-संग्राम साथी मौलवी लियाकत हुसैन अपने जीवन-कर्म में सच्चे भारतीय थे। उन्होंने स्वदेशी आंदोलन में सक्रिय रहते हुए तुर्की टोपी पहनना सदा के लिए छोड़ दिया। उन्हीं दिनों कलकत्ता में क्रांतिकारियों के बीच रत्नागिरी का आठले नाम का एक बम निर्माता क्रांतिकारी युवक आया, जिसने कलकत्ता के पास एक ग्राम में क्रांतिकारियों को बम बनाना सिखाया। डॉ. हेडगेवार ने भी उससे बम बनाना सीखा परन्तु उसी बीच आठले की मृत्यु हो गई, जिसका अंतिम संस्कार डॉ. हेडगेवार तथा श्याम सुन्दर चक्रवर्ती ने गुप्त रूप से किया। क्रांतिकारी रहकर ही डॉक्टर जी ने कभी विवाह न करने का संकल्प लिया था।

संघ के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख रहे बाबा साहब आप्टे बताते थे, "जब सन् 1939 का वर्ष समाप्ति की ओर था और यूरोप में महायुद्ध जारी था उन दिनों डॉ. हेडगेवार को रात-दिन एक ही चिंता रहती थी कि महायुद्ध की इस स्थिति में अंग्रेजों को भारत से जड़-मूल सहित उखाड़ फेंकने के लिए उतना प्रभावी, उग्र और शक्तिशाली संगठन भी जल्दी ही खड़ा कर लेना है। अतः उन दोनों जब कभी कोई स्वयंसेवक उनसे जोर देकर कहता कि, 'डॉक्टर साहब! अपने संगठन कार्य के लिए एक बड़े कार्यालय की जरूरत है। संघ का वैसा कार्यालय नहीं है, आप उसे बनवाने का विचार करिए।' तो डॉक्टर जी कह दिया करते थे, 'अरे, इस समय जरूरत है संघ का कार्य बढ़ाने की, उसी में सब शक्ति लगाओ, वर्ना तुम जो विशाल कार्यालय

बनाओगे और अंग्रेज उसी में ठाठ से अपनी कचहरी लगाकर बैठेंगे।' स्पष्ट ही ब्रिटिश दासता डॉक्टर जी की नजरों से कभी ओझल नहीं हो पाई।

संघ के कार्यवाह रह चुके भैयाजी दाणी भी लिखते हैं, "अंग्रेज सरकार के रोष तथा निषेध की परवाह न करते हुए अपने विद्यालय में डॉक्टर जी ने 'वंदेमातरम्' का उद्घोष गुंजाया, भले इसके लिए उन्हें वह विद्यालय छोड़ देना पड़ा।"

अपने क्रांतिकारी जीवन में डॉ. हेडगेवार ने स्वयं शस्त्रों का प्रयोग किया, वह भी इतनी सावधानी से कि तत्कालीन अंग्रेज सरकार संदेह होते हुए भी उन्हें पकड़ न सकी। उनके इस सशस्त्र आंदोलन ने अंग्रेज शासकों में आतंक उत्पन्न किया और जनता में सरकार के प्रति असंतोष पैदा किया। डॉक्टर जी को मातृभूमि का स्वातंत्र्य सौभाग्य चाहिए था और अपने जीवन में ही देश का स्वातंत्र्य देखना उनका अभीष्ट था। उसी दिशा में उन्हें निश्चित कदम उठाने थे। प्रखर क्रांतिकारी विनायक दामोदर सावरकर, उनके बड़े भाई गणेश दामोदर सावरकर और छोटे भाई डॉ. नारायण दामोदर सावरकर, वामनराव जोशी, बैरिस्टर अभ्यंकर तथा सुभाष चन्द्र बोस उनके स्नेही थे। 1922-23 में पुलगांव में वर्धा तालुका परिषद् आयोजित हुई। परिषद् के सामने जब स्वराज्य का प्रस्ताव रखा गया तो उसमें अमदाबाद-कांग्रेस द्वारा स्वीकृत 'स्वराज्य' शब्द का अर्थ कुछ लोग 'ब्रिटिश साम्राज्य के अंतर्गत स्वराज' करते थे, परंतु डॉक्टर जी को यह कदापि मान्य न था। वह तो ब्रिटिश राज्य विहरित स्वराज्य को ही वास्तविक स्वराज्य मानते थे, क्योंकि वह प्रखर स्वातंत्र्यवादी थे। अतः डॉक्टर जी ने परिषद् में जब स्वराज्य का प्रस्ताव रखा तो उसमें 'ब्रिटिश राज्य विरहित' स्वराज्य, यह संशोधन सुझाया।

डॉ. हेडगेवार और संघ एक-दूसरे के पर्याय थे। जब कभी भी किसी प्रभावशाली व्यक्ति का निधन होता है तो उससे जुड़ी संस्था को अपूरणीय क्षति का सामना करना पड़ता है। संघ के बारे में भी इसके मित्र और ईर्ष्यालु भाव से पीड़ित दोनों प्रकार के लोग ऐसा ही सोचते थे। परंतु सार्थक उद्देश्य के लिए समर्पित इस सारथी ने संघ को कालजयी बना दिया। तभी तो लोकमान्य तिलक द्वारा स्थापित अंग्रेजी समाचार पत्र 'मराठा' ने 23 अगस्त, 1940 को अपने प्रथम पृष्ठ पर जो पहला बड़ा समाचार प्रकाशित किया उसका शीर्षक था- 'डॉ. हेडगेवार्स संघ स्टील गोइंग स्ट्रांग'।

कांग्रेस की मुस्लिम तुष्टिकरण की नीतियाँ

जिस काल काल खंड में डॉ. हेडगेवार ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की वह मुस्लिम तुष्टिकरण का काल था। 1920 में देश में खिलाफत आंदोलन शुरू हुआ। मुसलमानों का नेतृत्व मुल्ला-मौलवियों के हाथों में था। इस काल खंड में मुसलमानों ने देश में अनेक दंगे किए। केरल में मोपला मुसलमानों ने विद्रोह किया। उसमें हजारों हिंदू मारे गए। मुस्लिम आक्रान्ताओं के आक्रमण के कारण हिंदुओं में अत्यंत असुरक्षितता की भावना फैली थी। हम संगठित हुए बिना मुस्लिम आक्रान्ताओं के सामने टिक नहीं सकेंगे, यह विचार अनेक लोगों ने प्रस्तुत किया। मुसलमानों का प्रतिकार करने के लिए हिंदुओं का संगठन करना चाहिए यह अर्थ लोगों के ध्यान में तुरंत आता था। उस समय के नेता मुसलमान समाज को उन्मादी समझते थे और यही सारे झगड़े की जड़ होने के कारण, उस समाज में शिक्षा का प्रसार करना, एक प्रमुख भाग मानते थे।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का लक्ष्य हिंदुओं को जाति, क्षेत्र और भाषा के कृत्रिम विभाजन के चलते उत्पन्न सामाजिक-सांस्कृतिक विरोधाभासों से उबारना है। इसकी आकांक्षा है कि भारत को विश्व गुरु का स्थान अपने कर्तृत्व, दर्शन और सांस्कृतिक प्रभाव से पुनः मिले।

डॉक्टर जी इस बात से सहमत न थे। वे उस समाज की धर्मान्धता तथा अपढ़ता को तो स्वीकार करते थे किंतु उसे संघर्ष का कारण नहीं मानते थे। वे तो उसका कारण उनके शिक्षित नेताओं में ढूंढते थे जिनके मन में अपने गत राज्य और वैभव को प्राप्त करने की इच्छाएँ प्रस्फुटित थीं और जिसको कि अंग्रेजों ने 'ऐतिहासिक अल्पसंख्यक' कहकर बढ़ावा दिया था।

कांग्रेस द्वारा चलाया जा रहा खिलाफत आंदोलन डॉ. साहब को पसंद न था। वे उसे सदा 'अखिल आफत' ही कहा करते थे। इसी समय से कांग्रेस ने मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति को अपनाया और भारतवर्ष की राजनीति में जमातवाद घुस आया जो कि डॉक्टर जी को कतई पसंद नहीं था।

आखिर उस समय के बड़े-बड़े नेताओं ने मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति क्यों अपनाई? इसका पहला और प्रमुख

कारण यह दिखता है कि अंग्रेज शासक मुसलमान जमातवाद को बढ़ावा देकर उनको 'ऐतिहासिक अल्पसंख्यक' कहते हुए राजकीय जीवन में अधिक सहूलियतें देकर सामान्य जन-जीवन से भी पृथक कर रहे थे।

डॉक्टर साहब को अपने समाज की धीर वृति पर पूरा भरोसा था। वे उसे भी मानने के लिए कदापि तैयार नहीं थे। उन्हें अपनी प्राचीन परंपरा तथा जीवन-ध्येय पर भी पूर्ण निष्ठा थी। हाँ! वे इस बात को मानते थे कि हिंदू समाज अपनी परंपरा भूल गया है। अंग्रेजों ने जाति व्यवस्था के स्थान पर जातिभेद शब्द का उपयोग कर जाति-जाति में भेद डालकर, जाति-जाति में ही संघर्ष का निर्माण किया था। इस कारण यहाँ का समाज छोटे-छोटे हिस्सों में बंट गया था और आपस में संघर्षरत भी था। यही कारण था कि जिससे विशाल समाज अपने को दुर्बल पाता था और इसी कारण से वह अन्य समाजों के आक्रमणों का शिकार बनता जा रहा था।

परन्तु कुछ नेताओं को यह तुष्टिकरण पसंद नहीं था। इसलिए वे हिन्दू समाज को बलशाली करना चाहते थे। इसीलिए उन्होंने हिंदू समाज के लिए हिंदू सभा निकाली। डॉक्टर साहब उसमें भी रहे परन्तु वे उससे संतुष्ट नहीं हुए। अत: यह कहा जा सकता है कि इस देश में चलने वाले करीब-करीब सभी आंदोलनों में न केवल उनका सक्रिय सहयोग ही रहा, अपितु उनमें वे अग्रसर भी रहे।

शक्ति का जागरण

स्वामी विवेकानन्द के प्रयासों से पश्चिमी समाज में हिंदुत्व के प्रति एक नया दृष्टिकोण विकसित हुआ था और लोग हिन्दू संस्कृति के मूल रहस्यों को जानने के लिए आकर्षित हुए। उन्होंने विश्व के समक्ष भारत

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ 'हिन्दू' शब्द की व्याख्या सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के संदर्भ में करता है जो किसी भी तरह से (पश्चिमी) धार्मिक अवधारणा के समान नहीं है। इसकी विचारधारा और मिशन का जीवंत संबंध स्वामी विवेकानंद, महर्षि अरविन्द, बाल गंगाधर तिलक और बी. सी. पाल जैसे हिंदू विचारकों के दर्शन से है।

की मूल्यवान आध्यात्मिक धरोहर को प्रतिष्ठित किया तथा हिंदू धर्म के मूल रहस्यों से विश्व को अवगत कराया। राष्ट्रीय संदर्भ में स्वामी रामतीर्थ, महर्षि दयानन्द, डॉ. हेडगेवार, महात्मा गांधी, डॉ. आंबेडकर, श्रीगुरुजी, पं.दीनदयाल उपाध्याय, दत्तोपंत ठेंगड़ी जैसे चिंतकों ने हिंदुओं को चिंतन की एक नयी शैली एवं विधा से सुसज्जित कर हिंदुत्व के पुनरुत्थान का सार्थक प्रयास किया। 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में अंतरराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय परिदृश्य में कई ऐसे संगठन प्रभाव में आए, जिन्होंने हिंदू धर्म की सनातन मर्यादा को प्रस्थापित करने का प्रयास किया। अमेरिका जैसे विकसित भौतिकवादी देश में हिन्दुत्व के प्रति आकर्षण सन् 1960 के दशक में तथा उसके बाद निरन्तर बना हुआ है। स्वामी प्रभुपाद, महर्षि महेश योगी, आचार्य रजनीश आदि ने हिंदू दर्शन के कुछ रहस्यों को विश्व के समक्ष प्रकट कर भौतिक जगत को आश्चर्य में डाल दिया है।

हिंदू चिंतकों के विचारों का यदि मूल्यांकन किया जाए तो यह स्पष्ट होता है कि उन्होंने विश्व समुदाय में हिंदुत्व के प्रति फैले भ्रम को न केवल दूर करने का प्रयास किया, अपितु हिंदुस्थान में सनातन संस्कृति के प्रति जो वैषम्यतापूर्ण विचारधाराएँ बलवती हो रही थीं उन्हें भी प्रतिबंधित करने का प्रयास किया। इन विचारकों ने सामाजिक समरसता स्थापित करने के लिए उन समस्त कुरीतियों को दूर करने का आवाहन किया। इस परिप्रेक्ष्य में आधुनिक भारत के वर्तमान हिंदू-हित चिंतकों का यह दायित्व होना चाहिए कि वे हिंदुत्व के मानवीय एवं कल्याणकारी मूल्यों को स्थापित करने के लिए निरंतर प्रयास कर और इस दिशा में आने वाली बाधाओं को निर्मूल करते रहें।

हिंदुत्व एक जीवन पद्धति है, जो अपनी प्रकृति में सनातन है। 'सनातन' शब्द उन जीवन मूल्यों और सिद्धांतों का द्योतक है, जो शाश्वत हैं। यह उस ज्ञान की अभिवृद्धि करने वाला है, जिसने समय के आघातों और ऐतिहासिक उठा-पटक को पीछे छोड़ दिया है। जीवन का यह दर्शन व्यापक, अपने आपमें परिपूर्ण और मानवीय है। यह सबकी भलाई और सबके कल्याण का वाहक है।

वस्तुत: राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का लक्ष्य हिंदुओं को जाति, क्षेत्र और भाषा के कृत्रिम विभाजन के चलते उत्पन्न सामाजिक-सांस्कृतिक विरोधाभासों से उबारना है। इसकी आकांक्षा है कि भारत को विश्व गुरु का स्थान अपने कर्तृत्व, दर्शन और सांस्कृतिक प्रभाव से पुन: मिले। ❐

आया त्योहारों का मेला

■ आचार्य मायाराम 'पतंग'

शरद पूर्णिमा

यूं तो दशहरे के अगले दिन पापांकुशा एकादशी भी होती है। उस दिन रामलीलाओं में भरत मिलाप (श्रीराम-भरत मिलन) की लीला दिखाई जाती है तो भी शरद पूर्णिमा को ही हम प्रमुख त्योहार मनाते हैं। यह शरद ऋतु आरंभ होने का शुभ दिन है। शरद पूर्णिमा को मंदिरों में, घरों में तथा आश्रमों में बढ़िया खीर बनाई जाती है। जिसे रात्रि को चांदनी में रखा जाता है। विश्वास है कि इस रात्रि को चन्द्रमा से खीर में अमृत टपकता है। यह खीर स्वास्थ्यवर्धक होती है। यह शुभ पूर्णिमा आदि कवि वाल्मीकि महर्षि का जन्म दिवस भी माना जाता है। उनकी झांकियां भी निकाली जाती हैं तथा सन्तों के प्रवचन कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं। रामकथा के आदि रचनाकार वाल्मीकि महर्षि सारे समाज के लिए पूजनीय हैं।

करवा चौथ

यह भी है तो गणेश पूजा ही परन्तु इस दिन प्रायः सभी सौभाग्यवती स्त्रियां अपने पति की दीर्घायु की कामना से उपवास रखती हैं। पूजित सामग्री अपने पति के चरण पूजकर सासू को अर्पित करती हैं। मिट्टी के कठवे में जल लेकर चन्द्रमा को अर्घ्य चढ़ाती हैं। यह व्रत अत्यन्त व्यापक स्तर पर समाज में मान्य है। अनेक स्त्रियां ईसाई या मुस्लिम होते हुए भी करवा चौथ का व्रत रखती हैं।

अहोई अष्टमी

अहोई अष्टमी भी माता दुर्गा का ही एक रूप है। इसे गोपाष्टमी नाम से भी जाना जाता है। इस दिन गाय बछड़ों की पूजा की जाती है। अहोई माता का चित्र दीवार पर बनाया जाता है। इस चित्र में माता के सात पुत्र, पुत्रवधू, गाय, बछड़े आदि बनाए जाते हैं। पुत्रवती माताएं उपवास करती हैं तथा रात्रि को अपने बच्चों के लिए तरह-तरह के पकवान बनाती हैं।

धनतेरस

त्रयोदशी को धन्वन्तरि त्रयोदशी कहा जाता है। समुद्र मंथन से इस दिन धन्वन्तरि अमृत कलश लेकर प्रकट हुए थे। इस दिन नए बरतन खरीदने की प्रथा है। इसी पात्र में प्रसाद भी रखा जाता है जिससे दीपावली के दिन पूजन किया जाता है।

नरक चौदस

चतुर्दशी तिथि को छोटी दीवाली भी कहते हैं। उस दिन भी पांच या सात घी के दीपक जलाकर पूजा, तुलसी, द्वार, भंडार, कूड़ा घर आदि पर रखे जाते हैं। उस दिन भगवान् श्रीकृष्ण ने नरकासुर या भौमासुर का वध किया था। उसकी कारागार से सोलह हजार एक सौ कन्याओं को मुक्त करवाया था।

दीपावली

कार्तिक मास की अमावस्या को महारात्रि माना जाता है। इस दिन दीपावली महोत्सव मनाया जाता है। वस्तुतः समुद्रमंथन से माता लक्ष्मी का उदय इसी तिथि को हुआ था। उनके स्वागत में ही समस्त विश्व में दीपों की पंक्तियां सजाई गईं। यह त्योहार

सतयुग से ही चला आ रहा था। त्रेता में भगवान राम का चौदह वर्ष वनवास पूर्ण करके अयोध्या लौटने का भी यही दिन था। अत: नगर की सफाई और साज-सज्जा तो दीवाली के लिए हो ही रही थी। श्रीराम जी के पधारने की खुशी ने उसमें और चार चांद लगा दिए। स्वागत में तरह-तरह के अस्त्र-शस्त्र चला कर भगवान राम का स्वागत किया गया। आजकल भी जैसे तोपों से सलामी देने की प्रथा है। इसी कारण दीवाली में बम पटाखे चलाने की प्रथा भी जुड़ गई। इस दिन गणेश लक्ष्मी की पूजा की जाती है। धन की देवी लक्ष्मी हैं परन्तु उसके उपयोग के लिए सद्बुद्धि की आवश्यकता है। बुद्धि के देवता विनायक गणेश हैं अत: उनकी पूजा भी साथ करना अनिवार्य है। लक्ष्मी का वाहन उल्लू है परन्तु गणेश जी साथ हों तो उनका वाहन हाथी हो जाता है जो सचमुच बहुत बुद्धिवान होता है। दीपक प्रकाश करता है। प्रकाश ज्ञान का प्रतीक। अज्ञान रूपी अंधकार पर ज्ञान रूपी प्रकाश की विजय का संदेश देती है दीवाली। यद्यपि अब तरह-तरह के बल्वों से रोशनी की जाती है तो भी परम्परा पालन के लिए दीपक अवश्य जलाए जाते हैं। आकाशदीप जलाने की भी परम्परा है। चौराहों पर चौमुखा दीपक भी रखा जाता है।

श्री गोवर्धन पूजा

भगवान कृष्ण ने इन्द्र पूजा से हटाकर ब्रजवासियों को गोवर्धन पर्वत की पूजा करवाई थी। इसका भाव है अपने पर्यावरण की पूजा। अपने पर्वत, अपने वृक्ष, अपने खेत, अपनी गायें तथा अपने दूध, दही की पूजा। गोबर से बनाए गोवर्धन की पूजा की जाती है। अपने पर्यावरण की सुरक्षा करने का संकल्प। मंदिरों में अन्नकूट का आयोजन होता है। छप्पन प्रकार के भोग बनाए जाते हैं। सब प्रकार की सब्जियां मिलाकर पकाई जाती हैं। कढ़ी चावल बनते हैं। भगवान को अर्पण करके मिला जुला प्रसाद बांटा जाता है। स्पष्ट है कि मीठा, नमकीन, तीखा, क्रीम, खट्टा सभी स्वाद तो भगवान के ही हैं। हमें भगवान का प्रसाद मानकर सब कुछ समान भाव से ग्रहण करना चाहिए।

भैय्या दूज

कार्तिक शुक्ल द्वितीया को भैय्या दूज मनाई जाती है। बहनों के घर भाई जाते हैं। बहनें उन्हें तिलक करती हैं और गोला भेंट करती हैं। रुचि अनुसार भोजन भी कराती हैं। भाई आशीष देते हैं तथा बहन के मंगल की कामना करते हैं। पुरानी कथा यह है कि यमराज एक बार अपनी बहन यमुना के घर पधारे। यमुना ने उनकी आरती उतारी तिलक दिया और उत्तम भोजन कराया। तृप्त यमराज ने यमुना से वर मांगने को कहा। यमुना ने वर मांगा कि जो भाई इस दिन अपनी बहन के घर पधारे उसका कभी अमंगल न हो और जो बहन भाई मथुरा में यमघाट पर एक साथ स्नान करें उन्हें सदा भाई-बहन बने रहने का अवसर मिले तथा कभी यमत्रास न झेलनी पड़े। यमराज ने 'तथास्तु' कह कर वरदान दे दिए। अत: रक्षाबंधन पर तो बहनें भाई के घर जाती हैं और भैय्या दूज पर भाई बहन के घर जाते हैं।

देवोत्थानी एकादशी

कार्तिक शुक्ल एकादशी भी एक बड़ा त्योहार है। इस दिन भगवान विष्णु निद्रा त्याग कर उठते हैं। सभी परिवार इस दिन सायंकाल में अपने कुलदेवताओं का आह्वान करते हैं। चातुर्मास की कृपा के पश्चात् उन्हें जगाते हैं। इसी दिन से परिवारों में विवाहादि शुभ कार्य पुन: होने लगते हैं। इसको हरि प्रबोधिनी एकादशी भी कहा जाता है। इसी दिन तुलसी का भगवान विष्णु से विवाह रचाने की भी परंपरा है। मंदिरों में इस दिन विवाह आयोजित किए जाते हैं। गन्ने, सिंघाड़े की नई फसल का भोग प्रभु को अर्पण किया जाता है। इसी दिन महाकवि कालिदास का जन्मदिवस भी मनाया जाता है।

कार्तिकी पूर्णिमा

कार्तिक समापन की पूर्णिमा को गंगा स्नान की परम्परा है। इसी दिन गंगा जी ने सगर के साठ हजार पुत्रों का उद्धार किया था। गत प्रतिपदा से जो कार्तिक स्नान प्रारंभ किया था उसकी पूर्ति गंगा स्नान से की जाती है। मास के सभी उत्सवों की सम्पन्नता गंगा घाटों पर दीपदान से होती है। पितरों के लिए भी इसी दिन दीपदान किया जाता है। वाराणसी, प्रयाग, हरिद्वार जैसे तीर्थों पर भारी भीड़ स्नान के लिए जाती है। रात्रि को हजारों लाखों दीपक गंगाजल में तैरते हुए मानो मन के अंधकार को दूर करते हैं। इसी दिन गुरुनानक जी का भी पावन जन्मदिन मनाया जाता है। वह भी दीपसज्जा से आलोकित होता है। ❐

नैसर्गिक पवित्रता का पर्व नवरात्र

■ विद्यानिवास मिश्र

वर्ष में दो नवरात्र पड़ते हैं-शारदीय और वासंती। दोनों संपातों में पड़ते हैं। संपात का अर्थ होता है-स्थूल रूप में रात-दिन का बराबर होना, पृथ्वी का सूर्य से सम दूरी होना। सूक्ष्म रूप से इसका अभिप्राय है संतुलन प्राप्त करने की स्थिति। ताप और शीत के बीच संतुलन होता है। शरद् में ताप उतरते-उतरते प्रखर हो उठता है और शीत आते समय बड़ा सुखद लगता है। वसंत में शीत उतरते-उतरते ही सिहरन पैदा करता है और नए ताप का चढ़ना सुखद लगता है। इसलिए इन दोनों ऋतुओं के तनाव में ऊर्जा पैदा होती है। उसकी सही पहचान हो, उसका सही विनियोग हो, इसलिए दोनों के शुक्ल पक्ष की प्रारंभिक नौ तिथियों में जगदंबा की पूजा-अर्चना और उनके निमित्त व्रत का विधान है।

जगदंबा की पूजा का विधान इसलिए है कि व्यक्ति अपनी कोई ऊर्जा है, इसका अभिमान छोड़ने का अभ्यास करे। सबकी ऊर्जा का स्रोत एक है, वही आदिशक्ति है, वही माँ है, वही नाना रूपों में व्यक्त होती है। फिर अदृश्य, अव्यक्त करुणा और ममता के प्रवाह में समा जाती है। वह व्यक्त दो कारणों से होती है-एक तो तब, जब आसुरी शक्ति का मद प्रबल हो जाता है, दुर्बल वेध्य बन जाता है, तब वह काली होकर अवतीर्ण होती है। वह शक्ति के मद का मद पीती है, तब वह विकराल होती है। दूसरा कारण है, उसे यों ही लीला करनी होती है, वह छोटी सी बच्ची बन जाती है, वह बच्चों की माँग पर तरह-तरह

के खिलौने बनाने वाली माँ बन जाती है।

वह भुवनमोहिनी बन जाती है। वस्तुतः प्रकृति में भी सुषमा तभी होती है, जब वह सु अर्थात् अच्छी तरह समता या संतुलन प्राप्त करती होती है। यह संतुलन पाने वाले या देने वाले के बीच हो, सोखने वाले या सींचने वाले के बीच हो, आवेग और शक्ति के बीच हो, तीव्रता और स्थिरता के बीच हो, संतुलन प्राप्त करने की प्रक्रिया ही सौंदर्य बनती है। शरद् की, वसंत की प्रकृति भी इसी प्रकार की प्रकृति है। शरद् में घनघोर वर्षा के बाद आकाश निर्मल होता है, वसंत में घनघोर शीत के कुहासों के बाद आकाश निर्मल होता है। दोनों ऋतुओं में कमल खिलते हैं। दोनों ऋतुओं में तरह-तरह के पंछियों के आने-जाने का कलरव गूँजता है। सर्वत्र एक चढ़ाव-उतार, आरोह-अवरोह दिखाई-सुनाई पड़ता है। इसी सुषमा को भुवनमोहिनी की चितवन कहते हैं, खंजन की तरह ऊँची हुई आँखें शरद् की हैं और कमल की तरह धुली हुई आँखें वसंत की हैं।

जगदंबा की पूजा का विधान इसलिए है कि व्यक्ति अपनी कोई ऊर्जा है, इसका अभिमान छोड़ने का अभ्यास करे। सबकी ऊर्जा का स्रोत एक है, वही आदिशक्ति है, वही माँ है, वही नाना रूपों में व्यक्त होती है।

हम नवरात्र में व्रत इसलिए करते हैं कि अपने भीतर की शक्ति, संयम और नियम से सुरक्षित हों, उसका अनावश्यक अपव्यय न हो। पूरी सृष्टि में जो ऊर्जा का प्रवाह आ रहा है, उसे अपने भीतर रखने के लिए भी पात्र की स्वच्छता

आवश्यक है। व्रत के साथ हम ऐसे पुष्पों से, ऐसी सुगंधियों से, ऐसे आमोद-प्रमोद के मनोरम उपायों से जगदंबा को रिझाने का प्रयत्न करते हैं, जो इस लोक में सबसे अधिक चटकीले हों, कमनीय हों, हृद्य हों, आस्वाद्य हों और संवेद्य हों।

गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य का अर्पण इसी भाव से होता है कि इस संसार में जो कुछ सुंदर है, वह सब माँ, तुम्हारा ही है। गंध के रूप में पृथ्वी तत्व अर्पित होता है। पुष्प के रूप में पुष्प की तरह खिला हुआ प्रसन्न आकाश अर्पित होता है। धूप के रूप में सर्वशोधक वायु तत्व अर्पित होता है। दीप के रूप में अग्नि तत्व अर्पित होता है और नैवेद्य के रूप में जल का अमृत अर्पित होता है।

इन पाँचों तत्वों की समष्टि तांबूल के रूप में अर्पित होती है। यह अर्पण इस भाव से होता है कि सीमित परिधि में रहने वाला तत्व अनंत असीम में निहित तत्व को अर्पित हो जाए। इन पांच तत्वों के अर्पण के साथ-साथ गीत-वाद्य भी अर्पित होते हैं, उनके माध्यम से मन अर्पित होता है। विश्व मन को स्तुतियाँ अर्पित होती हैं, उनके व्याज से सीमित बुद्धि असीम बुद्धि को अर्पित होती है। जप और ध्यानयोग के द्वारा आत्मा अर्पित होती है विश्वात्मा को। इस प्रकार शक्ति के आराधन का यह नवरात्र कार्यक्रम उत्सव के रूप में मनाया जाता है। दु:ख-सुख दोनों अर्पित होते हैं ऐसी माँ को जो जागती रहती हैं हर बच्चे की देखरेख के लिए। वह यह देखती रहती हैं कि कहीं कोई बच्चा दूसरे बच्चे के साथ अन्याय तो नहीं कर रहा है। सताने वाले बच्चे को वह दंड देती है, चोट खाए हुए बच्चे को

गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य का अर्पण इसी भाव से होता है कि इस संसार में जो कुछ सुंदर है, वह सब माँ, तुम्हारा ही है। गंध के रूप में पृथ्वी तत्व अर्पित होता है। पुष्प के रूप में पुष्प की तरह खिला हुआ प्रसन्न आकाश अर्पित होता है। धूप के रूप में सर्वशोधक वायु तत्व अर्पित होता है। दीप के रूप में अग्नि तत्व अर्पित होता है और नैवेद्य के रूप में जल का अमृत अर्पित होता है।

सहलाती है। वह सताने वाले को बड़ी डरावनी लगती है और सताए जाने वाले को बड़ी दयालु। पर है वह एक ही। उसी के अनेक रूप दिखाई पड़ते हैं-

केनोपमा भवतु तेदस्य पराक्रमस्य
रूपं च शत्रुभयकार्यतिहारि कुत्र।
चित्ते कृपा समरनिष्ठुरता च दृष्टा
त्वयेव देवि वरदे भुवनत्रयेहपि।

इन अनेक रूपों में कोई भेद नहीं है। व्यापार में भेद है, तत्वत: कोई भेद नहीं है। दो या बहुत दिखने का द्वैत नहीं होता है। दो का अनुभव करने भर या गान करने से दो या बहुत होता है। हम व्यापार की विविधता देखते हैं, सब व्यापारों का मूल स्रोत नहीं देखते। हर व्यापार के पीछे कोई-न-कोई मंगल संकेत रहता है।

यही कारण है कि जगदंबा सबको अपनी वत्सल छाया में समेटती हैं- बड़े-से-बड़े ज्ञानी को, बड़े-से-बड़े विरागी तपस्वी को और अज्ञ-से-अज्ञ, अबोध-से-अबोध जन को, अधम-से-अधम विषयों में फँसे जन को। बस, इतना ही याद रहता है-संतान कैसी भी हो, माँ तो बस माँ होती है। एक बार सब दुराव भर छोड़ दें, उनके आगे सब कुछ रख दें, अपनी दुर्बलता, अपनी क्षमता सब उन्हीं को सौंप दें, उन पर छोड़ दें। निश्चय ही माँ मंगल करेंगी। वे सर्वमंगल मांगल्या हैं।

ऐसी माँ की अर्चना जिस सौष्ठव से, जिस भाव से की जानी चाहिए, वह हो नहीं रही है, इसीलिए इतना अमंगल है। देखने में लगता है, बड़ा उत्साह है, बड़ा भावोन्माद है पर भीतर-भीतर कहीं-न-कहीं दूसरे से बढ़-चढ़कर दिखने का भाव रहता है। जगदंबा यह सहन नहीं करतीं और तब सृष्टि का संतुलन बिगड़ता है। नवरात्र का पर्व नैसर्गिक पवित्रता और बाल-सुभाव के आवाहन का पर्व है। यह आह्वान जितनी सुरुचि से, जितनी सादगी से, जितनी प्रकृति के साथ संतुलन बुद्धि रखते हुए किया जाए जितने बाल-सुलभ भाव से, सरल-निश्छल मन से किया जाए उतनी ही जगदंबा प्रसन्न होती हैं। काश, हम आज अमंगल के घेरे में घिरे हुए लोग समझते तो हमारा आह्वान कर्ण-कटु ध्वनियों का हाहाकार न होता। हमारे आयोजन इतने दिखाऊ और खोखले न होते। नवरात्र का संदेश नवसृष्टि का संदेश है, इसे हम समझ लें तो विश्व-मंगल का नया अध्याय प्रारंभ हो जाए। ❐

('भारतीय संस्कृति के आधार' से साभार)

भारतीय संस्कृति में सेवा

■ बृजेश मिश्र

'सेवा परमो धर्मः' एक प्रसिद्ध संस्कृत उद्धरण है, जो भगवत गीता, रामायण, महाभारत, वेदों सहित कई धार्मिक ग्रंथों में पाया जाता है। इसका अर्थ है- सेवा ही सबसे बड़ा धर्म है। इस सूत्र में यह बताया गया है कि सेवा, विशेष रूप से निःस्वार्थ भाव से की गई सेवा, मानव जीवन का सर्वोच्च कर्तव्य और धर्म है। यह विचार हिंदू धर्म और भारतीय संस्कृति में गहरे रूप से निहित है, जहाँ सेवा को आध्यात्मिक और नैतिक रूप से महत्वपूर्ण माना गया है।

प्राचीन काल में ऐसे निस्वार्थी लोकहित-निरत ऋषि, मुनि, ब्राह्मण, पुरोहित, योगी, संन्यासी होते थे, जो समस्त आयु लोकहित के लिए दे समर्पित कर देते थे। कुछ विद्यादान, पठन-पाठन में ही आयु व्यतीत करते थे। उपदेश द्वारा जनता की शिक्षा, स्वास्थ्य, धर्मपरायणता आदि सद्गुणों को बढ़ाने का प्रयत्न किया करते थे। मानवीय स्वभाव में जो सत तत्व है, उसी की वृद्धि में वे अपने अधिकाँश दिन व्यतीत करते थे। ये ज्ञानी उदार महात्मा अपने आप में जीवित-कल्याण की संस्थाएँ थे, यज्ञ रूप थे। जब ये जनता की इतनी सेवा करते थे, तो जनता भी अपना कर्त्तव्य समझ कर इनके भोजन, निवास, वस्त्र, सन्तान का पालन-पोषण का प्रबन्ध करती थी। इस प्रकार हमारे पुरोहित, विद्यादान देने वाले ब्राह्मण, मुनि, ऋषि दान दक्षिणा द्वारा जनता की सर्वतोमुखी उन्नति का प्रबन्ध किया करते थे। दान द्वारा उनके जीवन की आवश्यकताएँ पूरी करने का विधान उचित था। जो परमार्थ और लोकहित, जनता की सेवा सहायता में इतना तन्मय हो जाए कि अपने व्यक्तिगत लाभ की बात सोच ही न सके, उसके भरण-पोषण की चिंता जनता को करनी ही चाहिए।

गोस्वामी तुलसीदास की द्वारा रचित श्रीरामचरितमानस में श्रीराम द्वारा परोपकार के संबंध में एक प्रसिद्ध चौपाई है: 'परहित सरिस धर्म नहिं भाई। पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।।' जिसका अर्थ है दूसरों की भलाई के समान कोई धर्म नहीं है, और दूसरों को पीड़ा देने के समान कोई अधर्म या पाप नहीं है।

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के इस कथन में यह स्पष्ट होता है कि उनके लिए परोपकार सबसे महान धर्म है। उनका जीवन ही इस बात का प्रमाण है कि वे हमेशा दूसरों की सहायता के लिए तत्पर रहते थे, चाहे वह उनकी प्रजा हो, उनके मित्र हों या फिर उनके शत्रु भी। उन्होंने हमेशा न्याय, सत्य और परोपकार को प्राथमिकता दी। उनके चरित्र से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें हमेशा दूसरों की भलाई और सुख के लिए कार्य करना चाहिए, और दूसरों को कष्ट देने से बचना चाहिए। राम के जीवन का हर पहलू परोपकार, करुणा और धर्म के आदर्शों से परिपूर्ण है, जिससे हमें भी प्रेरणा लेनी चाहिए।

भगवान श्रीकृष्ण का जीवन और उपदेश परोपकार और धर्म के महान सिद्धांतों पर आधारित हैं। उन्होंने अपने जीवन और कर्मों के माध्यम से धर्म और परोपकार के आदर्शों को स्थापित किया। श्रीमद्भगवद्गीता में श्रीकृष्ण

ने निस्वार्थ कर्म (परोपकार) और लोकसंग्रह (समाज कल्याण) के महत्व पर जोर दिया है।

भगवद्गीता 3.20: में कहा गया है कि जनकादि महान राजा कर्मों के द्वारा ही सिद्धि को प्राप्त हुए। इसलिए, लोकसंग्रह (समाज कल्याण) के लिए भी आपको कर्म करना चाहिए। इस प्रकार से श्रीकृष्ण यह बताते हैं कि निस्वार्थ कर्म से व्यक्ति न केवल आत्मिक उन्नति प्राप्त कर सकता है, बल्कि लोक कल्याण भी कर सकता है। उन्होंने राजा जनक जैसे महापुरुषों का उदाहरण देकर यह समझाया कि कर्म केवल व्यक्तिगत मुक्ति के लिए नहीं होना चाहिए, बल्कि समाज और संसार की भलाई के लिए भी होना चाहिए।

भगवद्गीता 3.25 में कहा गया है कि भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि जैसे अज्ञानी लोग आसक्ति के साथ कर्म करते हैं, वैसे ही ज्ञानी लोग भी, आसक्ति रहित होकर, समाज की भलाई के लिए कर्म करें।

श्रीकृष्ण के परोपकार का सिद्धांत यह है कि व्यक्ति को अपने कर्मों का फल अपेक्षा किए बिना, समाज की भलाई के लिए कार्य करना चाहिए। उन्होंने पूरे जीवन में दूसरों के कल्याण के लिए काम किया, चाहे वह अर्जुन को महाभारत के युद्ध में धर्म की राह दिखाना हो, या गोपियों, ग्वालों और अपनी प्रजा की सेवा करना हो। उनके उपदेश हमें यह सिखाते हैं कि परोपकार और धर्मपरायणता का जीवन जीना ही सच्चा कर्तव्य है।

भगवद्गीता में श्रीकृष्ण निःस्वार्थ कर्म (सेवा) का उपदेश देते हैं। गीता में कर्मयोग का अर्थ है निःस्वार्थ रूप से कर्म करना, जो सेवा का ही रूप है। उपनिषदों और वेदों में भी सेवा का महत्व बताया गया है, जहाँ मनुष्य को दूसरों के कल्याण के लिए कर्म करने की प्रेरणा दी गई है।

भगवान राम का जीवन ही इस बात का प्रमाण है कि वे हमेशा दूसरों की सहायता के लिए तत्पर रहते थे, चाहे वह उनकी प्रजा हो, उनके मित्र हों या फिर उनके शत्रु भी। उन्होंने हमेशा न्याय, सत्य और परोपकार को प्राथमिकता दी। उनके चरित्र से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें हमेशा दूसरों की भलाई और सुख के लिए कार्य करना चाहिए, और दूसरों को कष्ट देने से बचना चाहिए।

मनुस्मृति 4.228 में कहा गया है कि किसी के मांगने पर आपके पास जो थोड़ा-बहुत है, उसे ईर्ष्या या दुःखरहित होकर अवश्य देना चाहिए, क्योंकि दान लेने वालों में कभी तो ऐसा सुपात्र मिलेगा जो सब दुःखों से पार कर देगा।

मनुस्मृति 4.229 में लिखा है कि जल का दाता संतुष्टि को, अन्न का दाता अक्षय सुख को, तिल का दाता अभीष्ट संतान को, दीपक का दान देने वाला उत्तम आंख को प्राप्त करता है।

मनुस्मृति 4.227 में बताया गया है कि मनुष्य सुपात्र को देखकर श्रेष्ठ कार्यों के लिए आत्मा की संतुष्टि और निः स्वार्थ, निर्लोभ एवं श्रद्धा भाव से शक्ति के अनुसार सदैव इष्ट यज्ञों के आयोजन संबंधी और परोपकार के कामों में आने वाले कुंआ, तलाब आदि निर्माण संबंधी कार्यों के लिए दानधर्म का पालन करें अर्थात दान दिया करें।

मनुस्मृति के अध्याय 4 श्लोक 226 में लिखा है कि आलस्य रहित होकर श्रद्धा से सदा यज्ञादि आदि का निर्माण करें। ईमानदारी से कमाए धन के द्वारा, श्रद्धापूर्वक किए गए ये कार्य अक्षय फल देने वाले होते हैं।

महर्षि वेदव्यास जी ने कहा है कि दूसरों का भला करना पुण्य है और दूसरों को अपनी वजह से दुःखी करना ही पाप है। रामायण और महाभारत जैसे ग्रंथों में भी सेवा के उदाहरण मिलते हैं। राम, कृष्ण, हनुमान, विदुर आदि ने सेवा के विभिन्न रूपों को अपने जीवन में अपनाया। इस प्रकार से हम पाते हैं कि भारतीय संस्कृति में सेवा, परोपकार और दान ना सिर्फ निहित है, बल्कि सेवा को सर्वोच्च धर्म बताया गया है।

वर्तमान समय में दान-वृत्ति, परोपकार और सेवा का अनुचित लाभ उठाने वाले अनेक अकर्मण्य, ठग, दुष्ट लाभ उठा रहे हैं निःशुल्क भोजन, निःशुल्क चिकित्सा, निःशुल्क शिक्षा का दुरुपयोग भी हो रहा है। वे स्वयं तो परिश्रम करना नहीं चाहते, मुफ्त का माल उड़ाना चाहते हैं। इसलिए दान करते समय, भोजन कराते समय सुपात्र व्यक्ति का अवश्य ध्यान दें। जरूरतमंद को, अपंग, अपाहिज कुछ काम न कर सकने वाले और बीमार व्यक्ति को दान करें। जितना संभव हो, जैसे संभव हो सहायता करें। हमारे यहाँ कहा गया है-दानशूरो विशिष्यते यानी दानवीर पुरुष ही अन्य सब पुरुषों से विशिष्ट है। ❐

जज साहब का सत्याचरण

■ गंगा प्रसाद 'सुमन'

बंगाल के न्यायाधीश श्री नीलमाधव बनर्जी अपनी न्यायप्रियता और धर्मपरायणता के लिए दूर-दूर तक ख्याति प्राप्त थे। वे किसी भी मुकदमे का निर्णय पूरी सत्य का पता लगाकर ही देने में सिद्धहस्त थे। जीवन दिनचर्या साधारण थी। निर्धनों के मुकदमें में न्याय दिलाने के लिए उनका योगदान नि:शुल्क होता था। सेवा निवृत्ति के बाद वे एक घातक बीमारी से रोगग्रस्त हो गए थे। रोग शैय्या पर पड़े-पड़े कष्ट सहन करते रहते, महीनों बीत गए। आस्तिक भाव से ईश्वर से रोग मुक्ति की प्रार्थना करते रहते, लेकिन वे कर्म फल का परिणाम स्वीकार करने के लिए विवश थे।

एक दिन जज साहब को कोई पुरानी बात स्मरण हो आई। आपने अपने परिवार के बीमा अधिकारी को अपने पास बुलवाया। लेटे-लेटे बोले, ''मैं स्वयं ही इस बीमारी के कष्ट का कारण हूं। मैंने अपनी युवावस्था में एक बीमा कराया था। उस समय मैं। डाइबिटीज (मधुमेह) की बीमारी से ग्रस्त था। लेकिन मैंने बीमा कराने के लिए अपने रोग को छिपाया था। मानवता के रूप में मैंने सत्याचरण का पालन नहीं किया। उस पाप का परिणाम मैं आज बीमारी के रूप में भुगत रहा हूँ।''

आगे जज साहब गहरी सांस लेते हुए बीमा अधिकारी को निर्देश देने लगे, ''यह बीमा की राशि न तो मुझे और न मेरे परिवार के किसी सदस्य को मिलनी चाहिए। यह सारी बीमा की राशि किसी धर्मकार्य और उत्थान में कल्याणकारी कार्यों के लिए लगा दी जाए।''

जज साहब ने सन्तोष की सांस ली। बीमा रद्द की सूचना मिलते ही उनका मुख मण्डल आभा से चमक उठा। उनके चेहरे पर सुख, शान्ति और सनतोष की छाया दिखाई दे रही थी। जज साहब तुलसी दल और गंगाजल ग्रहण करते ही पंचतत्वों में विलीन हो गए।

असत्याचरण से कमाया हुआ धन कष्ट कारक होता है। परिवार में सात्विक धन की कमाई आने से ही सुख, शान्ति, प्रेम, सौहार्द और आनंद की वर्षा होती है। अन्तिम समय में यदि पाप का प्रायश्चित कर लिया जाए तो उसकी आत्मा का परमात्मा से मिलना हो जाता है। जैसे एक बछड़ा अपनी मां को हजारों गायों के झुण्ड में पहचान लेता है, वैसे ही पाप भी पापकर्ता के पीछे-पीछे लगता हुआ पहचान लेता है। पाप कर्म कभी छिपता नहीं और किसी को छोड़ता भी नहीं। जैसे रूई में लपेटी हुई आग छिप नहीं सकती, वैसे ही किया हुआ पाप कर्म छिप नहीं सकता। ❐

पितरों को नमन

■ मानवेन्द्र

वो कल थे तो आज हम हैं
उनके ही तो अंश हम हैं।

जीवन मिला उन्हीं से
उनके कृतज्ञ हम हैं,
सदियों से चलती आयी
श्रृंखला की कड़ी हम हैं।

गुण धर्म उनके ही दिये
उनके प्रतीक हम हैं,
रीत रिवाज उनके हैं दिये
संस्कारों में उनके हम हैं।

देखा नहीं सब पुरखों को
पर उनके ऋणी तो हम हैं,
पाया बहुत उन्हीं से पर
न जान पाते हम हैं।

दिखते नहीं वो हमको
पर उनकी नजर में हम हैं,
देते सदा आशीष हमको
धन्य उनसे हम हैं।

खुश होते उन्नति से
दुखी होते अवनति से,
देते हमें सहारा
उनकी संतान जो हम हैं।

इतने जो दिवस मनाते
मित्रता प्रेम आदि के,
पितरों को भी याद कर लें
जिनकी वजह से हम हैं।

आओ नमन कर लें, कृतज्ञ हो लें,
क्षमा माँग लें, आशीष ले लें
पितरों से जो चाहते हमारा भला
उनके जो अंश हम हैं...!!!
सर्व पितरों को शत शत नमन! ❐

नरेन्द्र मोदी के आदर्श : श्री लक्ष्मणराव इनामदार

गुजरात में वकील साहब के नाम से लोकप्रिय श्री लक्ष्मण माधवराव इनामदार का जन्म 21 सितम्बर, 1917 (भाद्रपद शुदी 5, ऋषि पंचमी) को ग्राम खटाव (जिला सतारा, महाराष्ट्र) में हुआ था। इनके पूर्वज श्रीकृष्णराव खटावदार ने शिवाजी के काल में स्वराज की बहुत सेवा की थी। अत: शिवाजी के पौत्र छत्रपति शाहूजी महाराज ने उन्हें इनाम में कुछ भूमि और 'सरदार' की उपाधि दी। तबसे यह परिवार 'इनामदार' कहलाने लगा। वकील साहब एक बड़े कुटुंब के सदस्य थे। सात भाई और दो बहिन, चार विधवा बुआ तथा उनके बच्चे सब साथ रहते थे। आर्थिक कठिनाई के बाद भी उनके पिता तथा दादाजी ने इन सबको निभाया। इससे वकील साहब के मन में सबको साथ लेकर चलने का संस्कार निर्माण हुआ। उनकी शिक्षा ग्राम दुधोंडी, खटाव तथा सतारा में हुई। 1939 में सतारा में एल.एल.बी. करते समय हैदराबाद निजाम के विरुद्ध आंदोलन जोरों पर था। लक्ष्मणराव ने शिक्षा अधूरी छोड़कर 150 महाविद्यालयीन छात्रों के साथ आंदोलन में भाग लिया। 1943 में महाराष्ट्र के अनेक युवक एक वर्ष के लिए प्रचारक बने। उनमें से एक वकील साहब भी थे। उन्हें गुजरात में नवसारी नामक स्थान पर भेजा गया। 1952 में वे गुजरात के प्रांत प्रचारक बने। उनके परिश्रम से अगले चार साल में वहां 150 शाखाएं हो गयीं। वे स्वास्थ्य ठीक रखने के लिए आसन, व्यायाम, ध्यान, प्राणायाम तथा साप्ताहिक उपवास आदि का निष्ठा से पालन करते थे।

सबसे सम्पर्क बनाकर रखना उनकी एक बड़ी विशेषता थी। पूर्व प्रचारक या जो कार्यकर्ता किसी कारणवश कार्य से अलग हो गये, अपने प्रवास में ऐसे लोगों से वे अवश्य मिलते थे। छोटे से छोटे कार्यकर्ता की चिंता करना उनका स्वभाव था। संघ कार्य के कारण कार्यकर्ता के जीवनयापन या परिवार में कोई व्यवधान उत्पन्न न हो, यह भी वे ध्यान रखते थे।

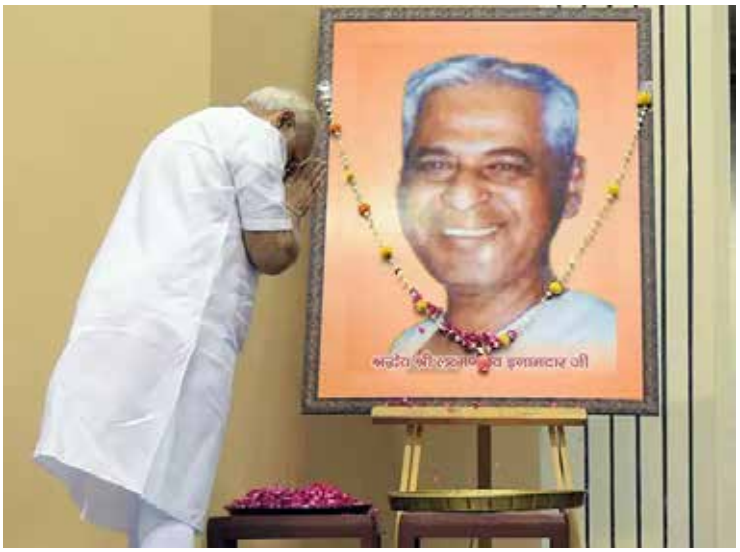

1973 में क्षेत्र प्रचारक का दायित्व मिलने पर गुजरात के साथ महाराष्ट्र, विदर्भ तथा नागपुर में भी उनका प्रवास होने लगा। अखिल भारतीय व्यवस्था प्रमुख बनने पर उनके अनुभव का लाभ पूरे देश को मिलने लगा। स्वयंसेवक का मन और संस्कार ठीक बना रहे, इसका वे बहुत ध्यान रखते थे। 1982-83 में उनका स्वास्थ्य बहुत खराब हो गया। एक सम्पन्न स्वयंसेवक ने उन्हें इलाज के लिए कुछ राशि देनी चाही; पर वकील साहब ने वह राशि निर्धनों के लिए चल रहे चिकित्सा केन्द्र को दिलवा दी। एक स्वयंसेवक ने संघ कार्यालय के लिए एक पंखा भेंट करना चाहा। वकील साहब ने उसे यह राशि श्री गुरुदक्षिणा में ही समर्पित करने को कहा। प्रचारक बाहर का निवासी होने पर भी जिस क्षेत्र में काम करता है, उसके साथ एकरूप हो जाता है। वकील साहब भाषा, बोली या वेशभूषा से सौराष्ट्र के एक सामान्य गुजराती लगते थे। देश का विभाजन, 1948 और 1975 का प्रतिबंध, सोमनाथ मंदिर का निर्माण, गोहत्या बंदी सत्याग्रह, चीन और पाकिस्तान के आक्रमण, विवेकानंद जन्मशती, गुजरात में बार-बार आने वाले अकाल, बाढ़ व भूकम्प, मीनाक्षीपुरम् कांड आदि जो भी चुनौतियां उनके कार्यकाल में संघ कार्य या देश के लिए आयीं, सबका उन्होंने डटकर सामना किया।

गुजरात में संघ कार्य के शिल्पी श्री लक्ष्मणराव इनामदार ने 15 जुलाई, 1985 को पुणे में अपना शरीर छोड़ा। गुजरात में न केवल संघ, अपितु संघ प्रेरित हर कार्य में आज भी उनके विचारों की सुगंध व्याप्त है। ❐

कृष्ण बनिए, दुर्योधन नहीं

■ गंगा प्रसाद 'सुमन'

अखिल भारतीय सेवा प्रमुख रहे आदरणीय श्री सूर्यनारायण राव जी ने एक बार एक बैठक में सेवा कार्य की मानसिकता के बारे में कुछ कहने से पूर्व सभी स्वयंसेवकों से कुछ प्रश्न पूछे- आप संस्कार केन्द्र चलाते हैं, तो क्या वहां चाय-पानी, भोजन-जलपान आदि करते हैं? अपने यहां भी उन्हें भोजन-जलपान पर बुलाते हैं?

बाद में उन्होंने पूछा कि भविष्य में अगर कभी कोई ऐसा अवसर आया, जब हमें वे भोजन के लिए बुलाते हैं तो कितने लोग जा सकते हैं, तो सभी पुरुषों ने तो हाथ उठा दिए लेकिन कुछ बहिनों ने हाथ नहीं उठाए। तब उन्होंने कहा कि यदि बहिनें तैयार होती हैं तो समाज में परिवर्तन जल्दी आता है। उन्होंने कहा कि लगभग 1200 वर्ष पूर्व केरल में जन्मे शंकराचार्य जी एक बार काशी में गंगा स्नान करने के लिए आए। स्नान के पश्चात् भगवान विश्वनाथ जी का दर्शन करने के लिए उत्साह से जा रहे थे। काशी की छोटी-छोटी गलियों में सामने से एक चांडाल जो अस्पृश्य माना जाता था, आने लगा। उसने शराब पी रखी थी। मुँह से फेन निकल रहा था। शंकराचार्य जी को लगा कि सामने से इतना अशुद्ध व्यक्ति आ रहा है। वह जोर से चिल्लाए- गच्छ-गच्छ (दूर चलो- दूर चलो)। मैं स्नान करके आ रहा हूं। उनके मन में भाव आया कि मैं शुद्ध होकर भगवान के दर्शन करने जा रहा हूं, और यह अशुद्ध आ रहा है। लेकिन वे बड़े आश्चर्यचकित हुए जब उस चांडाल ने कहा कि आप किसको दूर चलने के लिए कह रहे हैं। मेरा शरीर और आपका शरीर दोनों पंचभूतात्मा हैं। दोनों एक ही हैं। मेरे और आपके अंदर एक ही आत्मा है। इस आत्मा से आत्मा दूर होना या पंचभूतात्मा शरीर से शरीर दूर होना, क्या चाहते हैं आप? अद्वैत का प्रचार करने वाले शंकराचार्य जी भी यही प्रचार कर रहे थे सब में एक ही आत्मा है। यह उस चांडाल के मुख से सुनकर शंकराचार्य जी अवाक् रह गए। हाथ जोड़, उनके पास गए और साष्टांग प्रणाम किया। पांच बार नमस्कार किया तथा एक-एक बार एक-एक श्लोक बोला। यह श्लोक 'मनीषा पंचाकम्' कहलाता है। अर्थात् ऐसा श्रेष्ठ ज्ञान बताने वाला चांडाल हो सकता है, या ब्राह्मण हो सकता है, कोई भी हो, वही मेरा गुरु है। अस्पृश्यता की विकृति जो मन में थी वह निकृष्ट है, नीच है, चांडाल है- यह भाव दूर हो गया और साष्टांग नमस्कार किया। शारीरिक व्यवहार से जो रूढ़ि थी, उसे बुद्धि ने समझा और वह भ्रम दूर हो गया।

सबके अधिकार समान हैं। ऐसा भाषण देने से और बोलने से समस्या का हल नहीं होता। आचरण से परिवर्तन होता है। आचरण का ही, हम एक नया इतिहास निर्माण कर रहे हैं। सैकड़ों वर्षों से जो कुरीतियां हमारे समाज में हैं, उनके स्थान पर हम हिन्दू बंधु सारे भाई-बहन हैं। ऐसा व्यवहार निर्माण करना है, ऐसा आचरण हमें दिखाना है। काशी में धर्म संसद हुई तो वहां धर्माचार्यों ने 'अस्पृश्यता कलंक है' ऐसी घोषणा की। डोम राजा को धर्म संसद के मंच पर बैठाकर माल्यार्पण किया, उनका स्वागत किया और संतों ने उनके घर जाकर भोजन भी किया। सामान्य समझ में रूढ़ियां निकालने के लिए आज भाषण की नहीं, व्यवहार और आचरण की आवश्यकता है। हर एक बस्ती, हर एक गांव में हमें ऐसा ही आदर्श चाहिए। हमारे अंदर समाज की सेवा का भाव है, हम समाज की एकता निर्माण करना चाहते हैं, अतः हम भी ऐसे आदर्श बन सकते हैं। संघ की प्रार्थना में, हम राष्ट्र के लिए शरीर भी अर्पण करने की बात करते हैं, पर अपने ही भाई के साथ हम भोजन खाने को तैयार नहीं हैं। ट्रेन में, बस में यात्रा करते समय जब हमें थकावट लगती है या प्यास लगती है तो हम पानी या कॉफी पीते हैं, उससे उसकी जाति नहीं पूछते। आज की परिस्थिति में समाज को जोड़ना सर्वाधिक महत्व का है। उसके लिए अपना मन तैयार करना पड़ेगा।

केवल बुद्धि से जानना पर्याप्त नहीं है। महाभारत में दुर्योधन ने कहा -जानामि धर्मम् न च मे प्रवृत्तिः, जानामि अधर्मम् न च मे निवृत्तिः। (मैं धर्म भी जानता हूं, अधर्म भी जानता हूं, परन्तु प्रवृत्ति से विवश हूं)। हमारी स्थिति दुर्योधन जैसी न बने, हमें तो कृष्ण बनना है। ❐

(बौद्धिक का सम्पादित अंश)

जब सुनी गई एक गरीब छात्र की पुकार

■ डॉ. शिवाली अग्रवाल

हमारा जीवन और आस-पास का संसार प्रेरक कहानियों घटनाओं और सीख का अथाह भण्डार है। ऐसी ही एक मर्मस्पर्शी और हृदय को झकझोरने वाली बात मेरे संज्ञान में आई। इसको जानकर इससे सीखकर व्यक्ति जीवन की जटिल समस्याओं का आसानी से समाधान पा सकते हैं। यह प्रसंग महाराजा अग्रसेन प्रौद्योगिकी संस्थान, रोहिणी, नई दिल्ली का है। प्रथम वर्ष का एक छात्र (राकेश गुप्ता) अग्रसेन प्रौद्योगिकी संस्थान के चेयरमैन के नाम एक पत्र लिखता है और उस पत्र में वो अपने जीवन की कड़वी सच्चाई बड़ी निडरता और निर्भीकता से उड़ेल देता है। अपनी फीस में से कुछ रकम कम करने की बात लिखते हुए उसने बताया कि कैसे फीस भरने के लिए और माता-पिता के सपने को साकार करने के लिए उसके पिता ने उनकी जमीन गिरवी रख दी और फिर भी रकम कम पड़ी तो माता और बहन ने अपने गहने भी साहूकार के पास गिरवी रखे। जब परिवार का सब गिरवी रखा गया और बाल-बाल कर्ज में डूब गया तब भी फीस की रकम पूरी न पड़ी। ऐसे में उस मेधावी छात्र ने अपनी वेदना पूरे स्वाभिमान से आदरणीय चेयरमैन को बेबाकी से कह दी। हो तो यह भी सकता था कि सामान्य पत्राचार के माध्यम से संस्थान छात्र के औपचारिक उत्तर दे देता, परन्तु प्रेरणास्रोत बात तो अब शुरू होती है। संस्थान के आदरणीय चेयरमैन श्रीमान डॉ. नन्द किशोर गर्ग जी ने छात्र के पत्र में छुपी पीड़ा, वेदना एवं स्वाभिमान को पहचाना। उन्होंने एक सम्बन्धित अधिकारी को तुरन्त जिला कुशीनगर के उस गाँव के लिए रवाना कर दिया जिसका पता छात्र ने पत्र में लिखा था और जमीन/गहने के कागज पत्र में संलग्न किये थे। संस्थान का अधिकारी उपरोक्त स्थान पर गया और सारी सच्चाई का

महाराजा अग्रसेन प्रौद्योगिकी संस्थान, रोहिणी, नई दिल्ली के चेयरमैन डॉ. नन्दकिशोर गर्ग ने एक गरीब छात्र राकेश गुप्ता का शुल्क माफ कर प्रस्तुत किया एक उदाहरण। अब वह छात्र पूरे पाँच वर्ष तक निःशुल्क पढ़ाई कर बनेगा एक योग्य इंजीनियर।

पता लगा कर जब लौटा तो पता लगा छात्र की एक-एक बात सच थी और उसका परिवार बेहद कष्टों का सामना कर रहा था। डॉ. नन्द किशोर जी ने उदार हृदय और सज्जनता का प्रमाण देते हुए बच्चे के पत्र को गम्भीरता से लेते हुए न केवल उसकी एक वर्ष की, अपितु पूरी कोर्स की 5 वर्ष की फीस माफ कर दी। इतना ही नहीं, अपने अधिकारी को भेज कर बच्चे के पिता की जमीन छुड़वाई, रकम भरी। बच्चे की माँ और बहन के गहने भी छुड़वाए और पूरी रकम साहूकार को भरी । कागज सम्मानपूर्वक बच्चे के पिता को और गहने बच्चे की माँ को सौंपे। यह करुणा गाथा यहीं नहीं रुकी। श्रीमान चेयरमैन जी ने छात्र को छात्रावास में रहने-खाने को कहा और आश्वासन दिया कि कोई पैसा नहीं लिया जाएगा। लेकिन छात्र एक स्वावलम्बी और संस्कारी बच्चा है। उसने एक के बाद उपकारों के आगे नतमस्तक होकर छात्रावास में फ्री में रहने-खाने के प्रस्ताव को ठुकरा दिया और कहा कि वो अपने दोस्तों के साथ बाहर रहेगा, अपना खाना स्वयं पका कर खाएगा।

श्रीमान डॉ. नन्द किशोर जी की प्रेरणा और दूरदर्शिता की वजह से एक छात्र की जिन्दगी संवर जाएगी, एक परिवार को होनहार नौनिहाल बच्चा और सारथी मिल जाएगा और इस देश को एक काबिल इंजीनियर चेहरा मिल जाएगा।

धन्य है ऐसी दृष्टि, ऐसी सोच और एक विशाल हृदय जो दूसरों की पीड़ा इस स्तर पर उतर कर महसूस कर सके और उसको दूर करने के लिए धन-मन-वचन-काया से सच्ची सेवा कर सके। मेरे लिए, समाज के लिए और प्रत्येक कार्यकर्ता के लिए इस प्रसंग में सीख का भण्डार है। समर्पण, त्याग, दूरदर्शिता, सेवा, वसुधैव कुटुम्बकम् की प्रेरणा हमको इस प्रसंग से मिलती है। अनेक तो नहीं हमको अपने जीवन में बस एक बालक को पढ़ा कर देश को लौटा देना चाहिए। ❐

'संत ईश्वर सम्मान' से सम्मानित हुए 17 साधक

■ प्रतिनिधि

श्री स्वामी ज्ञानानंद जी महाराज से सम्मान प्राप्त करते हुए कुमार विश्वास। साथ में हैं (बाएं से) श्री परांग अभ्यंकर, श्री किरेन रिजिजू, श्री कपिल खन्ना और श्री मोहन यादव

गत 2 अक्तूबर को नई दिल्ली स्थित भारत मंडपम् में आयोजित एक कार्यक्रम में संत ईश्वर फाउंडेशन द्वारा 17 साधकों को 'संत ईश्वर सम्मान' से सम्मानित किया गया। इस समारोह में महामंडलेश्वर गीतामनीषी स्वामी श्री ज्ञानानंद जी महाराज, संसदीय कार्य एवं अल्पसंख्यक कार्य मंत्री श्री किरेन रिजिजू, मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री मोहन यादव सहित कई गणमान्य व्यक्तियों की विशेष उपस्थिति रही। अभावग्रस्त और दुरूह प्रदेशों में समाज सेवा के कार्य करने वाले व्यक्तियों/संस्थाओं का चयन करने वाली संत ईश्वर सम्मान समिति वर्ष 2015 से प्रारंभ हुए संत ईश्वर सम्मान द्वारा प्रतिवर्ष ऐसे संगठनों एवं व्यक्तियों को सम्मानित किया जाता है, जो निस्वार्थ भाव से समाज सेवा का कार्य कर रहे हैं। इस अवसर पर महामंडलेश्वर गीतामनीषी स्वामी श्री ज्ञानानंद जी महाराज ने अपने आशीर्वचन में कहा कि सेवा साधकों के सम्मान के इस अभियान के प्रारंभ से मेरा जुड़ाव रहा है। संत ईश्वर के प्रयासों को राम की सबरी, कृष्ण के सुदामा के साथ जोड़ते हुए उन्होंने कहा कि इस संस्था ने भारतीय धर्म की परम्परा को आगे बढ़ाते हुए भारत की संस्कृति के सेवाभाव को जीवंत रखने का अनूठा और सफल प्रयोग किया है।

केंद्रीय मंत्री श्री किरण रिजिजू ने कहा कि यह आज के समय की विडम्बना है कि सकारात्मक कार्य करने वाले लोगों की पहचान उन लोगों की तुलना में कम होती है, जो नकारात्मक कार्यों से देश और समाज को नुकसान पहुंचाते हैं। ऐसे में संत ईश्वर फाउंडेशन जैसी संस्था का प्रयास निश्चित रूप से सकारात्मक बदलाव लाएगा, ऐसी मेरी अपेक्षा और शुभकामनाएं हैं। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री मोहन यादव ने कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए कहा कि संत ईश्वर जैसे कार्यक्रम में सम्मिलित होना मेरे लिए निश्चित ही सौभाग्य की बात है। परमात्मा के द्वारा दिया गया एक महत्वपूर्ण कर्म समाज सेवा है, परन्तु भारत की सनातन धर्म जैसा दुनिया में और कोई भी राष्ट्र नहीं है, जहाँ सेवा ही धर्म है।

विशेष सम्मान से सम्मानित कवि कुमार विश्वास ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि मेरे लिए सम्मानित होने का अवसर संकोच लाता है। दरअसल मेरा प्रारंभिक चेतना का उदय विद्रोह से हुआ परन्तु संत ईश्वर सम्मान द्वारा सम्मान्नित होना मेरे लिए गर्व की बात है। उन्होंने कहा कि जिस देश में धर्म राजधर्म से ऊपर होता है वो देश सर्वश्रेष्ठ होता है। देश की संसद में सेंगोल का प्रतिष्ठित होना इस बात का साक्षात् प्रमाण है।

सम्मान समारोह में उपस्थित सभी आगन्तुकों का आभार प्रकट करते हुए संस्था के अध्यक्ष श्री कपिल खन्ना ने बताया कि यह सम्मान व्यक्तिगत एवं संस्थागत रूप में मुख्यत: चार क्षेत्र-जनजातीय, ग्रामीण विकास, महिला-बाल विकास एवं विशेष योगदान (कला, साहित्य, पर्यावरण, स्वास्थ्य और शिक्षा) में तीन श्रेणियों 1 विशेष सेवा सम्मान, 4 विशिष्ट सेवा सम्मान एवं 12 सेवा सम्मान में दिया जाता है। इसके अंतर्गत क्रमश: शॉल, 5 लाख रु. की राशि प्रत्येक, एवं 1 लाख राशि प्रत्येक एवं सभी विजेताओं को शॉल, प्रतीक चिह्न, प्रमाण-पत्र व प्रतीक चिह्न सहित प्रत्येक वर्ष कुल 32 लाख रु की धनराशि से व्यक्तियों और संस्थाओं को सम्मानित किया जाता है। विगत वर्षों में संस्था द्वारा 120 व्यक्ति/संस्थाओं को सम्मानित किया गया है और इनमें से 6 व्यक्तियों/संस्थाओं को बाद में भारत सरकार ने पद्म पुरस्कारों से भी सम्मानित किया है।

सेवा परमो धर्म की भावना को चरितार्थ करते हुए इस सम्मान के निर्णायक मंडल में श्री एस. गुरुमूर्ति (निर्देशक, भारतीय रिजर्व बैंक), श्री प्रमोद कोहली (से.नि. मुख्य न्यायाधीश, सिक्किम उच्च न्यायालय), पद्मश्री जवाहर लाल कौल (वरिष्ठ पत्रकार), पद्मश्री रामबहादुर राय (अध्यक्ष, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र), श्री पन्नालाल भंसाली (अध्यक्ष, राष्ट्रीय सेवा भारती) एवं श्री गुणवंत कोठरी (अखिल भारतीय कार्यकारिणी सदस्य, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ) ने महती भूमिका निभाई है। ❐

समता से मिलती है शक्ति

■ श्रीराम शर्मा आचार्य

''ॐभूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्''

हमारे पूज्य ऋषियों ने जब ध्यानावस्था में देखा कि जब तक आकाशी संसार, पृथ्वी वाले संसार और मनुष्य के शरीर वाले संसार में सामंजस्य न हो जाये तब तक मनुष्य परम सुख को प्राप्त नहीं कर सकता। जब तक तीनों संसारों में एक जैसी बात न हो रही हो, मनुष्य का सुखी रहना असम्भव है, क्योंकि जो कुछ आकाश में है, वह इस संसार में है, और जो इस संसार में है, वह इस शरीर में है। तो शरीर वाले संसार को ठीक रखने के लिये आवश्यक है कि पृथ्वी वाला संसार ठीक हो और पृथ्वी वाले संसार को ठीक रखने के लिये आवश्यक है कि आकाशी संसार ठीक हो इससे हम इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि यदि आकाशी संसार ठीक हो तो पृथ्वी व मनुष्य के शरीर वाले दोनों संसार अपने आप ठीक हो जाते हैं।

सामंजस्य का यह नियम प्रकृति का अटल नियम है। आप देखते हैं कि जब तक दो मनुष्यों के विचारों में समता नहीं होती तब तक उनमें मित्रता कदापि नहीं हो सकती। यदि होती भी है तो अस्थायी, स्थायी नहीं रहती। क्या कभी गँवार और फिलास्फर का नम्र व अहंकारी का अमीर से गरीब का, सदाचारी व संयमी पुरुष का कपटी-पाखण्डी, व्यसनी और दुराचारी से और श्रेष्ठ का नीच से मेल हो सकता है ? नहीं क्योंकि यहां समता का नियम भंग हो जाता है। समता एक ऐसी अद्भुत आकर्षण शक्ति है जो दोनों को एक दूसरे की ओर खींच कर रखती है।

यदि मनुष्य सुखी रहना चाहता है, यदि वह चाहता है कि सूर्य, चन्द्रमा, वायु, जल, पृथ्वी आदि उसे शक्ति प्रदान कर ऊपर उठावें, यदि वह चाहता है कि सूक्ष्म प्रकृति के अन्तराल में काम करने वाली अदृश्य दिव्य शक्तियों, जिन्हें देवता कहते हैं, को अनुकूल बना कर और उनसे घनिष्ट सम्बन्ध स्थापित करके, दिव्य गुणों और शक्तियों को धारण करके सुख और शांति को प्राप्त करे तो उसे यज्ञ करना होगा, आकाशी संसार को ठीक रखना होगा। चूँकि यह दिव्य शक्तियां सूक्ष्म हैं, इसलिये इन तक पहुँचने के लिये सूक्ष्म की ही आवश्यकता है। यज्ञ स्थूल वस्तुओं को सूक्ष्म बना देता है। यज्ञ इन तीनों संसारों अर्थात् आकाश, पृथ्वी और शरीर में समन्वय करता है और यह समन्वय परिणाम में सुख और शांति का साम्राज्य स्थापित करता है।

आयुर्वेद शास्त्र इसी समन्वय के नियम पर आधारित है। आयुर्वेद का सिद्धान्त यह है कि जिस प्रकार समस्त विश्व भगवान ने पंचतत्व (अग्नि, जल, वायु, आकाश, पृथ्वी) से बनाया उसी प्रकार मनुष्य का शरीर भी इन पंचतत्वों का समन्वय है, जिससे वात, पित्त कफ तीन तत्व बनते हैं। इनकी सम अवस्था में रहने से कोई रोग नहीं होता। तीनों की विकृत अवस्था ही रोग का कारण है और इस विकृत अवस्था को समता में लाना ही निरोगता है। सूक्ष्म का ही प्रभाव पड़ता है, इसी पर होमियोपैथी विज्ञान का आधार है। उनके मतानुसार रोग सूक्ष्म जीवनी शक्ति को होता है, शरीर को नहीं, क्योंकि जड़ शरीर में कोई शक्ति नहीं होती, जब तक सूक्ष्म जीवनी शक्ति उसमें गति न ला दे। उस सूक्ष्म जीवनी शक्ति तक पहुँचने और सूक्ष्म रोग को ठीक करने के लिये आवश्यक है कि ओषधि भी सूक्ष्म हो, क्योंकि स्थूल ओषधि स्थूल शरीर पर ही प्रभाव डाल सकती है, सूक्ष्म रोग तक उसकी पहुंच कदापि नहीं हो सकती। इसीलिये होमियोपैथिक ओषधियां सूक्ष्म होती हैं। उनमें स्थूलत्व बिल्कुल समाप्त हो जाता है। इसी आधार पर होमियोपैथिक डाक्टर कहते हैं कि ऐलोपैथिक आदि स्थूल ओषधियाँ सूक्ष्म जीवनी शक्ति को हुए सूक्ष्म रोग तक न पहुंचने के कारण उसे दबा देती हैं।

होम्योपैथिक विज्ञान के अनुसार यदि रोग और औषधि के लक्षणों में समता न हो तो औषधि सूक्ष्म होते हुये भी उसे ठीक नहीं कर सकती क्योंकि समता का नियम भंग होने से आरोग्य शक्ति क्षीण हो जाती है। समता मो बहुत शक्ति है। यह मिलाने, जोड़ने, योग सिद्ध करने और मोक्ष दिलाने वाली महान शक्ति है। संयोग अर्थात् पदार्थों का परस्पर संगतिकरण ही संसार की स्थिति का कारण है और वियोग विनाश का हेतु। एक दूसरे में प्रेम, एकता, सहयोग और सद्भावों का आविर्भाव तभी होता है जब उनमें समता हो, इसी समता के अटल सिद्धान्त को लेकर ही हमारे प्राचीन ऋषियों ने यज्ञ का महान् आविष्कार किया होगा। ❐

भारतीय समाज में परिवर्तन

■ ऋषिता अग्रवाल

इक्कीसवीं सदी में भारतीय समाज ने कई बड़े और छोटे बदलावों का सामना किया है। ये बदलाव न केवल तकनीकी और आर्थिक हैं, बल्कि परिवार, मानवता और नैतिकता पर भी गहरा प्रभाव डाल रहे हैं। आज का भारतीय समाज उस समाज से काफ़ी अलग है जिसे हमारे पूर्वजों ने जिया और समझा था। परिवार का स्वरूप, सामाजिक मूल्य और नैतिकता की धारणाएँ तेजी से बदल रही हैं।

पारिवारिक जीवन में बदलाव

भारतीय समाज में पारिवारिक ढांचा हमेशा से ही संयुक्त परिवार पर आधारित रहा है। जहाँ कई पीढ़ियाँ एक ही छत के नीचे रहती थीं और आपसी सहयोग और सहारे का वातावरण होता था। लेकिन आज के समय में, विशेषकर शहरी क्षेत्रों में, एकल परिवारों का चलन बढ़ गया है। इसका एक प्रमुख कारण आधुनिक जीवनशैली और आर्थिक आवश्यकताएँ हैं। उदाहरण के लिए, मुंबई, बेंगलुरु और दिल्ली जैसे महानगरों में लोग नौकरी की वजह से अपने गृह नगरों से दूर रहने को मजबूर हैं, और इस प्रक्रिया में वे अपने परिवार से दूर होते जा रहे हैं।

एक और उदाहरण है कि पहले जहाँ शादी के बाद बहुएं अपने ससुराल में पूरे परिवार के साथ रहती थीं, वहीं अब वे पति के साथ अलग घर में रहना पसंद करती हैं। यह परिवर्तन छोटे शहरों में भी दिखने लगा है। इस बदलाव का एक उदाहरण हम टीवी शो 'अनुपमा' में देख सकते हैं, जहाँ संयुक्त परिवार का महत्व और उससे उत्पन्न होने वाली चुनौतियों को चित्रित किया गया है।

हालांकि, यह बदलाव पूरी तरह नकारात्मक नहीं है। एकल परिवार में स्वतंत्रता और व्यक्तिगत निर्णय लेने की क्षमता बढ़ी है। युवा अब अपनी ज़िंदगी के फैसले स्वयं लेने में सक्षम हो रहे हैं, जिसका सकारात्मक प्रभाव उनके आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता पर पड़ता है। फिर भी, इस प्रक्रिया में पारिवारिक जुड़ाव और बुजुर्गों के प्रति जिम्मेदारी कम होती जा रही है, जो कि चिंता का विषय है।

मानवता के मूल्यों में बदलाव

मानवता के मूल्यों में भी बड़े बदलाव आए हैं। पहले जहाँ समाज में दया, करुणा और भाईचारा प्रबल थे, अब प्रतिस्पर्धा और आत्मकेंद्रितता बढ़ रही है। उदाहरण के लिए, पहले गाँवों में कोई भी व्यक्ति अगर किसी मुश्किल में होता था, तो पूरा गाँव उसकी मदद के लिए खड़ा हो जाता था। आज यह भावना शहरीकरण और जीवनशैली की आपाधापी में कहीं खो गई है। एक उदाहरण 2020 की लॉकडाउन स्थिति है, जब लाखों प्रवासी मजदूर अपने घर वापस जाने के लिए संघर्ष कर रहे थे, और उन्हें बहुत कम सामाजिक मदद मिली।

इस घटना से यह स्पष्ट होता है कि मानवीयता और सामाजिक सहयोग धीरे-धीरे कमजोर हो रहे हैं। लोग अपनी जरूरतों और समस्याओं में इतने उलझे हुए हैं कि दूसरों की परेशानियों को देखने और समझने का समय नहीं है। परंतु इस सब के बीच कुछ लोग ऐसे भी हैं जो समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का प्रयास कर रहे हैं।

सोशल मीडिया ने भी मानवता के मूल्यों को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज लोग वर्चुअल संबंधों में इतने व्यस्त हो गए हैं कि वास्तविक जीवन के संबंध कमजोर हो रहे हैं। फिर भी, सोशल मीडिया के माध्यम से कई लोग सामाजिक कल्याण के मुद्दों पर जागरूकता फैला रहे हैं, जिससे समाज में एक नई सोच का उदय हो रहा है।

नैतिकता में परिवर्तन

इक्कीसवीं सदी में नैतिकता के मूल्यों में भी बड़ा बदलाव आया है। पहले लोग अपने आचरण और निर्णयों में सत्य, ईमानदारी और न्याय को सर्वोपरि मानते थे। उदाहरण के तौर पर, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महात्मा गांधी ने नैतिकता और सत्य के सिद्धांतों पर चलकर देश को आज़ादी दिलाने की प्रेरणा दी। लेकिन आज के समय में लोगों का ध्यान तेजी से सफलता और संपत्ति अर्जित करने पर है, चाहे इसके लिए नैतिकता से समझौता ही क्यों न करना पड़े।

भ्रष्टाचार और अनैतिक कार्यों की घटनाएँ दिन-प्रतिदिन बढ़ रही हैं। एक उदाहरण विभिन्न घोटालों का है जो राजनीतिक और कॉर्पोरेट क्षेत्रों में अक्सर सामने आते हैं, जैसे कि 2जी घोटाला और सारदा चिट फंड घोटाला। इस प्रकार की घटनाएँ समाज में नैतिकता

की गिरावट का प्रतीक हैं।

हालांकि, नैतिकता के इस पतन के बीच कुछ सकारात्मक उदाहरण भी हैं। जैसे कि 'रतन टाटा' जैसे उद्योगपति जो नैतिकता, पारदर्शिता और सामाजिक कल्याण के मूल्यों पर चलकर व्यापार जगत में आदर्श स्थापित कर रहे हैं। वे अपने उद्योगों को केवल लाभ कमाने का साधन नहीं मानते, बल्कि समाज को बेहतर बनाने की जिम्मेदारी भी समझते हैं।

कुछ सकारात्मक बदलाव

इन नकारात्मक परिवर्तनों के बावजूद, भारतीय समाज में कुछ सकारात्मक बदलाव भी हुए हैं। सबसे प्रमुख बदलाव महिलाओं की स्थिति में आया है। पहले जहाँ महिलाएँ केवल घर की चारदीवारी तक सीमित थीं, आज वे शिक्षा, राजनीति, खेल, और व्यापार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

साथ ही, जात-पात और वर्गभेद जैसे मुद्दों में भी सुधार हुआ है। 'आर्टिकल 377' के तहत LGBTQ+ समुदाय के अधिकारों को मान्यता मिलना इस दिशा में एक बड़ा कदम है।

निष्कर्ष

इक्कीसवीं सदी में भारतीय समाज में हो रहे बदलाव हमारे जीवन के हर पहलू को प्रभावित कर रहे हैं। हालांकि, इन परिवर्तनों के नकारात्मक पक्ष भी हैं, लेकिन समाज में सकारात्मक पहल भी देखने को मिल रही है। यह हम पर निर्भर करता है कि हम किस दिशा में आगे बढ़ते हैं।

परिवर्तन अवश्यंभावी हैं, लेकिन इन परिवर्तनों के बीच हमें अपने पारंपरिक मूल्यों, मानवता और नैतिकता को बनाए रखना होगा। समाज में सकारात्मक परिवर्तन की दिशा में काम करने वाले लोग हमें उम्मीद देते हैं कि हम आने वाले समय में एक बेहतर समाज का निर्माण कर सकते हैं। ❐

सेवाधम के छात्रों के साथ मनाया जन्मदिन

लैण्ड होर्डिंग व मेन्टरशिप कार्यक्रम डॉ. निधि रस्तोगी ने सेवाधाम एवं वजीराबाद में बच्चों के बीच शुरू किया है। इस कार्यक्रम में बच्चों को उचित मार्गदर्शन, वात्सल्य प्रेम जैसा वातावरण देने का उनका प्रयास किया जाता है। इसी कड़ी में गत 26 सितंबर को डॉ. निधि रस्तोगी के जन्मदिवस पर सेवाधाम में पढ़ने वाले 12वीं कक्षा के 17 छात्र अभिषेक सर के साथ शाहदरा स्थित उनके घर गए। जैसे ही ये छात्र उनके घर पहुंचे डॉ. निधि रस्तोगी ने उनका जोरदार स्वागत किया। इसके बाद उन्होंने उन छात्रों को अपनी माता जी से मिलवाया। वहां हिन्दी साहित्य पर कुछ देर तक चर्चाएं हुईं। माता जी ने भी साहित्य की महत्ता के बारे में छात्रों को बताया। डॉ. रस्तोगी ने छात्रों के साथ अनौपचारिक बातचीत की, सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए।

डॉ. निधि रस्तोगी की बेटी ऋतिभ ने भरत नाट्यम नृत्य बच्चों के समक्ष प्रस्तुत किया। बच्चों ने अपने घर/परिवार, राज्य की बातें और भविष्य की योजना पर चर्चा की, साथ ही गीत, कहानी और अपने संस्मरण सुनाए। कुल मिलाकर एक हंसी-खुशी का पारिवारिक वातावरण, अपनेपन का एहसास बच्चों को हुआ। इस अवसर पर बहुत ही सुरुचिपूर्ण भोजन भी हुआ। इसके साथ ही यह अनौपचारिक कार्यक्रम संपन्न हो गया। ❐

हार मान कर मत बैठिए

■ अमित कुमार

एक बार मैं अपने गाँव जा रहा था। रास्ते में एक छोटे से स्टेशन पर ट्रेन रुकी। वहाँ 15 मिनट का ठहराव था, इसलिए मैं थोड़ी देर टहलने के लिए प्लेटफार्म पर उतर गया। स्टेशन पर काफी भीड़ थी। मेरी नजर अचानक एक बेंच पर बैठे एक व्यक्ति पर पड़ी। मैं उसे गौर से देख ही रहा था कि ट्रेन का हॉर्न बजा, और मैं जल्दी से अपनी सीट पर लौट आया।

ट्रेन में बैठते ही मैंने चाय का आर्डर दिया। चाय पीते-पीते मेरे दिमाग में पुरानी यादें तैरने लगीं। मुझे वह रात याद आई जब मैं खुद रेलवे स्टेशन पर बैठा था, अपनी जिंदगी की परेशानियों से जूझ रहा था।

रात गहराने लगी थी। तभी एक व्यक्ति ने मुझसे माचिस मांगी। मैंने जवाब दिया, मैं सिगरेट नहीं पीता।

वह मुस्कुराकर बोला, भाई! मैंने सिगरेट नहीं, माचिस मांगी है।

मैं थोड़ा चिढ़ते हुए बोला, जब मैं सिगरेट नहीं पीता, तो माचिस क्यों रखूं?

वह हंसते हुए चायवाले से माचिस और चाय मंगवाने लगा। फिर मुझसे कहा, हाँ, आपकी बात सही है, पर मैंने सोचा...

मैंने उसकी बात बीच में काटते हुए कहा, आप क्या सोचते हैं, इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। आप बेवजह मुझे परेशान कर रहे हैं। अपना काम कीजिए।

इतना कहकर मैं दूसरी बेंच पर जाकर बैठ गया। थोड़ी देर बाद चायवाला आया और मुझे चाय देने लगा।

मैंने हैरान होकर पूछा, मैंने चाय कब ऑर्डर की?

वह बोला आपने नही उन साहब ने आपके लिए मंगवाई है

अब मैं और गुस्से में जाकर उस व्यक्ति से भिड़ गया, आपकी प्रॉब्लम क्या है? मुझे क्यों परेशान कर रहे हैं?

वह शांत स्वर में बोला, भाई, मैंने सोचा बारिश हो रही है, ठंड भी है, आप थके हुए लग रहे हैं। चाय से शायद थोड़ा आराम मिलेगा।

मैंने फिर चिढ़कर कहा, यही तो हमारे देश की समस्या है, कोई किसी को चैन से बैठने भी नहीं देता। मैंने सोचा था स्टेशन पर आराम से बैठूंगा, लेकिन आप आ गए।

इतना कहकर मैं उसे छोड़कर जाने को हुआ, लेकिन वह अब भी शांत था। उसने मुस्कुराते हुए कहा, क्यों परेशान हो? क्या हुआ?

इस बार उसकी शांति ने मुझे कुछ सोचने पर मजबूर कर दिया। मैंने थोड़ा रुककर पूछा, आपको जानकर क्या मिलेगा?''

वह बोला, शायद तुम्हारी परेशानी का हल मिल जाए, या कम से कम तुम्हारे दिल का बोझ थोड़ा हल्का हो जाए।

उसकी बातों में एक सुकून था। मैंने हिम्मत जुटाई और उसे अपने जीवन की कहानी सुनाने लगा। मैंने बताया कि मेरे पिताजी एक सरकारी दफ्तर में चपरासी थे, और मेरी माँ लोगों के घरों में काम करके मुझे पढ़ा रही थीं। मेरे पिताजी का सपना था कि मैं आईपीएस अफसर बनूं, लेकिन मेरा सपना अलग था। मुझे नौकरी करने से ज्यादा लोगों को नौकरी देना अच्छा लगता था।

पिताजी ने मेरे सपनों का सम्मान करते हुए गाँव की ज़मीन बेचकर मुझे पैसे दिए, और मैंने अपना व्यापार शुरू किया। सब कुछ अच्छा चल रहा था। मैंने शादी भी कर ली, और दो प्यारे बच्चे भी हो गए। शुरुआती कुछ सालों में व्यापार बहुत अच्छा चला। मैं बहुत खुश था, लेकिन एक गलत निवेश ने सब कुछ बर्बाद कर दिया। धीरे-धीरे सारी संपत्ति खत्म हो गई। अब सिर्फ मकान बचा है, और अगर कल किस्त नहीं भरी तो वो भी नीलाम हो जाएगा।

मेरी बात सुनकर वह व्यक्ति गंभीरता से बोला, तुम अपने आप को एक और मौका क्यों नहीं देते? हो सकता है सब ठीक हो जाए।

फिर उसने पूछा, क्या तुमने कभी

अभिषेक वर्मा का नाम सुना है?

मैंने सोचा, क्या वही जो काफी फेमस बिजनेसमैन है?

वह बोला, हाँ, वही! कुछ साल पहले वह भी बर्बादी की कगार पर था। उसके पास चाय के पैसे तक नहीं थे। लेकिन उसने अपने आप को एक और मौका दिया, और आज वह पहले से ज्यादा सफल है।

मैंने उसकी बात सुनकर कहा, ये सब फिल्मी बातें हैं, असल जिंदगी में ऐसा नहीं होता। और फिर आपकी हालत भी तो मुझसे बेहतर नहीं लग रही। कपड़े फटे हुए, चश्मा टूटा हुआ, और हाथों में लकड़ी! वैसे आप हैं कौन?

उसने धीरे से मुस्कुराते हुए कहा, मैं ही अभिषेक वर्मा हूँ।

यह सुनकर मैं हक्का-बक्का रह गया। उसने बेंच से उठते हुए कहा, मैं रोज़ इस समय अपने पुराने दिनों की यादों को ताजा करने स्टेशन आता हूँ। और अगर मुझे कोई मेरी जैसी हालत में मिलता है, तो उससे बातें कर लेता हूँ।

इतना कहकर वह बाहर निकला और एक चमचमाती कार में बैठकर चला गया।

उस रात के बाद मैंने भी अपने आप को एक और मौका देने का फैसला किया। अगले दिन मैंने बैंक जाकर अपनी समस्या बताई, और थोड़ी मोहलत मांगी। बैंक ने मेरा रिकॉर्ड देखकर मुझे थोड़ा वक्त दिया और फाइनेंस की भी व्यवस्था कर दी। मैंने फिर से अपने व्यवसाय को शुरू किया और धीरे-धीरे सबकुछ पटरी पर आने लगा। आज मैं फिर से सफल हूँ।

ट्रेन की सीट पर बैठा मैं ये सब सोच ही रहा था कि टीटी की आवाज़ ने मुझे वर्तमान में खींच लिया। मैंने टिकट दिखाया और देखा कि मेरा स्टेशन भी आने वाला था। कुछ देर बाद मैं ट्रेन से उतर कर टैक्सी में बैठा और घर की ओर चल पड़ा।

हो सकता है, आप भी कभी जीवन की कठिनाइयों से हार मान बैठे हों। शायद आपके पास कोई "अभिषेक वर्मा" न आए, लेकिन फिर भी, खुद को एक और मौका देना कभी बंद मत कीजिए। हो सकता है, आपकी ज़िंदगी भी बदल जाए। याद रखें, जब तक हम खुद को एक और मौका नहीं देंगे, तब तक हमें कभी पता नहीं चलेगा कि हम क्या कर सकते हैं। ❐

सुयश स्नेह मिलन

गत 29 सितंबर 2024 को प्रात: 9:30 बजे से 12:30 तक सुयश स्नेह मिलन का कार्यक्रम भास्कराचार्य कॉलेज ऑफ़ अप्लाइड साइंसेज,सेक्टर 2 द्वारका नई दिल्ली में आयोजित हुआ। इसमें समाज के वैसे लोग जिनकी अपने क्षेत्र में रचनात्मक गतिविधियां समाज को समुन्नत और स्वतंत्र सामाजिक आर्थिक गतिविधियों के पूर्ण उत्थान में अपनी अहम भूमिका निभा रही हैं और समाज में दूसरों के लिए सही मार्गदर्शन करने की अवस्था दे रही हैं, वैसे सहभागियों ने अपनी रचनात्मक सोच को इस आयोजन के माध्यम से रखकर समाज और देश के बीच सकारात्मक सोच के तहत निर्माण की गतिविधियों में आम लोगों

की मनोवृत्ति और भागीदारी को प्रोन्नत करने के उद्देश्य से प्रभावकारी दृष्टिकोण दिखाई दिया। इस तरह के रचनात्मक गतिविधियों की जानकारी समाज को प्रदान हो। यह कार्यक्रम निश्चित तौर पर समाज और देश के लोगों के लिए बहुत ही उपयोगी और सार्थक सिद्ध हो सकता है।

इसमें समाज के विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाले व्यक्तियों ने भाग लिया। उनकी रचनात्मक सोच और अनुभवों को साझा करने के माध्यम से, समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए प्रेरित किया गया।

कार्यक्रम के उद्देश्य : 1. समाज में रचनात्मक गतिविधियों को बढ़ावा देना। 2. समाजिक और आर्थिक उत्थान में योगदान देना। 3. समाज में सकारात्मक सोच को प्रोत्साहित करना। 4. समाज के लिए मार्गदर्शन और प्रेरणा प्रदान करना। ❐

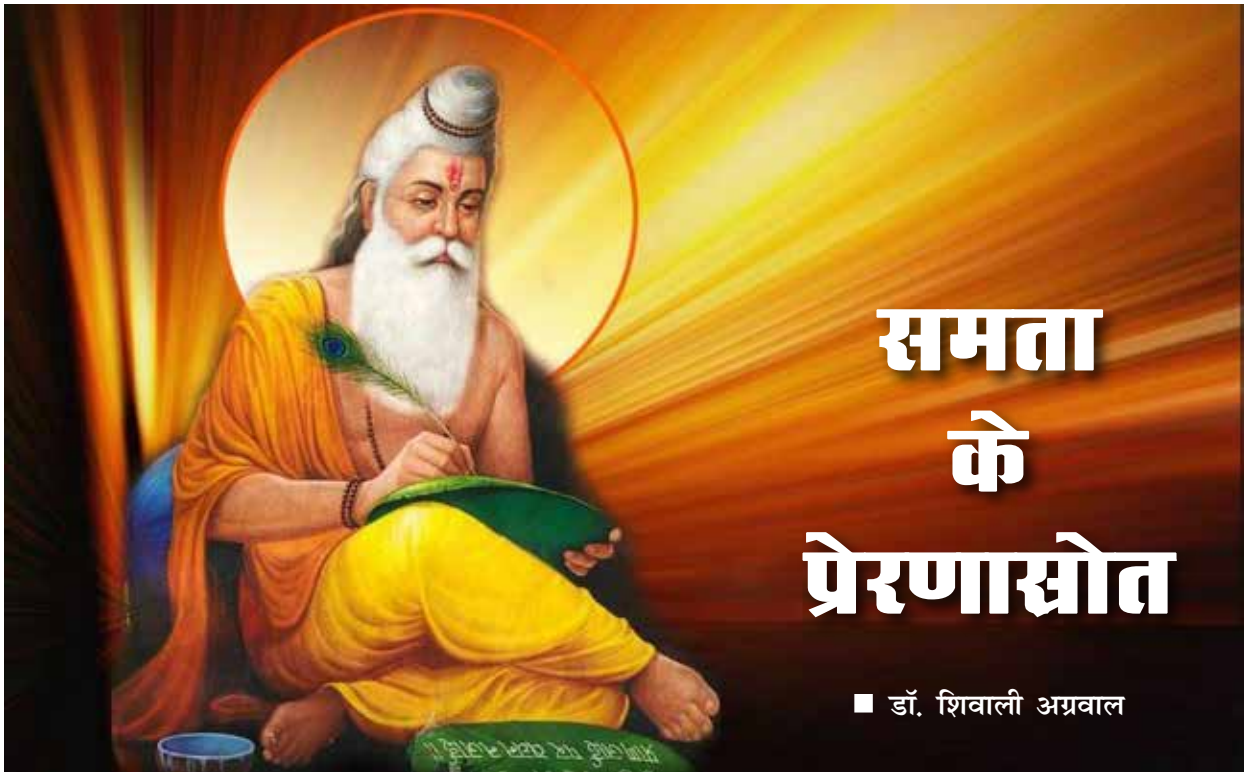

समता के प्रेरणास्रोत

■ डॉ. शिवाली अग्रवाल

महर्षि वाल्मीकि का प्रारंभिक नाम रत्नाकर था। नारद मुनि ने उन्हें भगवान राम का एक उत्साही भक्त बना दिया। वाल्मीकि जयंती महर्षि वाल्मीकि के सम्मान में मनाई जाती है, जिन्होंने भारतीय इतिहास के सबसे महान महाकाव्यों में से एक रामायण की रचना की थी। यह दिन एक समान्य नागरिक से एक महान ऋषि बनने की कहानी को दर्शाता है, जो पश्चाताप, ज्ञान और भक्ति की शक्ति को उजागर करता है। उनकी रचना, रामायण, न केवल भगवान राम के जीवन का वर्णन करती है, बल्कि नैतिक जीवन जीने के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में भी काम करती है। हर साल यह आश्विन मास की पूर्णिमा तिथि को मनाया जाता है। इस वर्ष यह 17 अक्टूबर 2024 को मनाया जाएगा। वाल्मीकि जयंती, जिसे प्रगट दिवस भी कहा जाता है, भारत भर में उत्साह और श्रद्धा के साथ मनाई जाती है।

महार्षि वाल्मीकि के विषय में एक पौराणिक कथा है कि एक दिन, जंगल में शिकार करते समय, रत्नाकर देव ऋषि नारद से मिले। नारद के प्रश्न के बाद, रत्नाकर ने अपने पाप का एहसास किया। अपने हिंसक जीवन को छोड़ते हुए, रत्नाकर ने ध्यान और तपस्या में अपने आपको समर्पित किया। उन्होंने अनेक वर्षों तक तपस्या की, जिससे उनके शरीर पर वल्मी ने अपना स्थान बना लिया। इसी कारण उन्हें 'वाल्मीकि' नाम मिला। एक बार युगल क्रौंच पक्षियों को एक बहेलिए द्वारा मार देने पर उनके मुख से अनायास ही श्लोक निकला–

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगम: शाश्वती समा:।
यत्क्रौंच मिथुनादेकमवधी: काममोहितम्।।

उसके बाद उन्होंने संस्कृत भाषा में रामायण महाकाव्य को लिखा। वाल्मीकि को संस्कृत साहित्य में प्रथम महाकवि के रूप में जाना जाता है। यह हिंदू परंपरा में एक सम्मानित ग्रंथ है। उन्हें उनके गहन आध्यात्मिक ज्ञान के लिए सम्मानित किया जाता है, और रामायण के लेखक के रूप में उनकी विरासत दुनिया भर में लाखों लोगों को प्रभावित करती है। संस्कृत साहित्य के पहले महाकवि होने का गौरव प्राप्त हुआ। रामायण में 24,000 श्लोक और 7 कांड हैं। ये महाकाव्य भगवान राम की जीवन गाथा बताता है। ऐसा माना जाता है कि वाल्मीकि राम और सीता के लव और कुश दोनों पुत्रों के शिक्षक और संरक्षक भी थे।

वाल्मीकि जयंती का महत्व हिंदू संस्कृति में बहुत अधिक है क्योंकि यह

महर्षि वाल्मीकि से संबद्ध जानकारियाँ

1. महर्षि वाल्मीकि जयंती- यानी प्रगट दिवस महाकाव्य रामायण के रचयिता महर्षि वाल्मीकि के जन्मोत्सव को स्मारित करती है।
2. वाल्मीकि जयंती आमतौर पर अश्विन मास की पूर्णिमा 17 अक्टूबर 2024 की रात को मनाई जाती है, जो ग्रेगोरियन कैलेंडर में सितंबर या अक्टूबर के महीनों के बराबर होता है।
3. महर्षि वाल्मीकि, जिनका जन्म रत्नाकर के रूप में हुआ था, एक शिकारी थे जिन्होंने देव ऋषि नारद से मिलकर एक गहन परिवर्तन किया। उन्होंने अपने हिंसक जीवन को छोड़ दिया और आध्यात्मिक ज्ञान और रामायण के लेखन के लिए प्रसिद्ध महर्षि बन गए।
4. भक्तजन वाल्मीकि जयंती के उत्सव में भाग लेकर पूजा, रामायण के पाठ, धार्मिक चर्चा, और परोपकार कार्यों में हिस्सा लेकर मनाते हैं। मंदिर और आश्रम विशेष आयोजन करते हैं, और समुदाय सामाजिक कल्याण कार्यों के लिए एकत्र होता है।
5. महर्षि वाल्मीकि का जीवन आध्यात्मिक परिवर्तन और ज्ञान और धर्म के प्रति शोध का उदाहरण प्रस्तुत करता है। उनका महाकाव्य, रामायण, कर्तव्य, नैतिकता, भक्ति, और अच्छे और बुरे के बीच शाश्वत युद्ध पर अनमोल शिक्षा देता है।
6. वाल्मीकि जयंती मुख्य रूप से हिंदू धर्मियों द्वारा मनाई जाती है, लेकिन विभिन्न धर्मों और सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों के लोग भी इस उत्सव में भाग लेते हैं, जो इसकी सामाजिक और धार्मिक एकता की संदेश को हाइलाइट करता है।

प्रसिद्ध महर्षि वाल्मीकि के जन्मदिन का उत्सव है, जिनके योगदानों ने पीढ़ियों को प्रेरित किया है। वाल्मीकि का महाकाव्य, रामायण, हिंदू धर्म में सबसे प्रिय और पूज्य पाठों में से एक है, जो प्रभु राम के जीवन और कार्यों का वर्णन करता है, जो दिव्य के अवतार हैं। रामायण न केवल एक अमर काव्य के रूप में है बल्कि यह धर्म, नैतिकता, और अच्छे और बुरे के बीच शाश्वत युद्ध के बारे में विशेष ज्ञान को देता है।

सांस्कृतिक विरासत और आध्यात्मिक मूल्यों को बढ़ावा देने में वाल्मिकी जयंती का पालन सर्वोपरि महत्व रखता है। भक्त और विद्वान महर्षि वाल्मिकी के जीवन और शिक्षाओं का सम्मान करने के लिए रामायण का पाठ, धार्मिक प्रवचन और परोपकारी गतिविधियों में संलग्न होते हैं। मंदिर और आश्रम शांति, समृद्धि और आध्यात्मिक उत्थान के लिए भगवान राम और महर्षि वाल्मिकी के आशीर्वाद का आह्वान करते हुए विशेष प्रार्थना और भजन आयोजित करते हैं। इसके अतिरिक्त, समुदाय खाद्य वितरण, चिकित्सा शिविर और शैक्षिक कार्यक्रमों को आयोजित करने के लिए एक साथ आते हैं, जो रामायण में वर्णित करुणा और सेवा के सार को दर्शाते हैं।

वाल्मीकि रामायण ग्रंथ- महर्षि वाल्मीकि को समर्पित, हिन्दू साहित्य में सबसे पुराना और प्रतिष्ठित महाकाव्यों में से एक है। संस्कृत में लिखा गया, यह प्रभु राम, भगवान का अवतार, उनकी पत्नी सीता और निष्ठावान भक्त हनुमान के जीवन और कार्यों का वर्णन करता है। यह विभिन्न विषयों पर चर्चा करता है, जैसे कर्तव्य, नैतिकता, भक्ति, और अच्छे और बुरे के बीच शाश्वत युद्ध। महाकाव्य अयोध्या से राम का वनवास, रावण द्वारा सीता का हरण, और हनुमान के नेतृत्व में बंदरों की सेना की सहायता से उसकी रक्षा के यात्रा का वर्णन करता है। वाल्मीकि रामायण केवल एक ऐतिहासिक कथा नहीं है बल्कि एक आध्यात्मिक मार्गदर्शक है, जो सत्य और धर्म के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है।

भक्त रामायण की कथा में अमर शिक्षाओं की याद करते हैं। वाल्मीकि की शिक्षा धार्मिक सीमाओं को पार कराती है, लोगों को भक्ति, नैतिकता, और दया के भाव में एकत्र करती है। जैसे हम इस शुभ दिन को मनाते हैं, हमें महार्षि वाल्मीकि द्वारा प्रस्तुत की गई गुणवत्ता के गुणों को अनुकरण करने का प्रयास करना चाहिए और हमें इस महाकाव्य से प्रेरित होकर एक उद्देश्य, नैतिकता, और आंतरिक संतोष की जीवन जीने का प्रयास करना चाहिए। ❐

महारास का आध्यात्मिक रहस्य

■ आचार्य अनमोल

श्रीमद्भागवत के दशम स्कंध के 29वें अध्याय में शरद् पूर्णिमा का दिव्य वर्णन किया गया है। कई लोग इस प्रसंग को वासना से जोड़कर लेकर भ्रांतिया फैलाते रहते हैं। श्रीमद्भागवत में ये रासलीला के पाँच अध्याय उसके पाँच प्राण माने जाते हैं। भगवान श्रीकृष्ण की परम लीला, गोपिकाओं और राधा के साथ होने वाली भगवान की क्रीडा का वर्णन यहाँ इन अध्यायों में है। 'रास' शब्द का मूल अर्थ रस है और रस तो स्वयं श्रीकृष्ण ही हैं- ''रसो वै स:''। भगवान की वह दिव्य लीला भगवान के दिव्य धाम में दिव्य रूप से निरंतर हुआ करती है। यह भगवान की विशेष कृपा से प्रेमी साधकों के हित के लिए कभी-कभी अपने धाम के साथ ही धरती पर भी हुआ करती है, जिसको देख-सुन एवं गाकर और स्मरण-चिंतन करके पुरुष भगवान की इस क्रीड़ा का आनन्द ले सकें।

वर्तमान में भगवान की लीलाओं के अस्तित्व पर ही अविश्वास प्रकट किया जा रहा है। ऐसी स्थिति में रहस्य न समझकर लोग तरह-तरह की अटकलें लगाते हैं। आश्चर्य की कोई बात नहीं है। यह लीला को अन्तर्दृष्टि से और मुख्यत: भगवत् कृपा से ही समझ में आती है।

ध्यान रहे कि भगवान का शरीर साधारण जीव शरीर की भाँति जड़ नहीं होता। जड़ की सत्ता केवल जीव की दृष्टि होती है, भगवान की दृष्टि में नहीं। यह देह है और यह देह धारण करने वाला, इस प्रकार का भेद-केवल लौकिक संसार में होता है। उस लोक में नही जहाँ की प्रकृति भी चिन्मय है। जब मनुष्य भगवान की लीलाओं के सम्बन्ध में विचार करने लगता है, तब वह अपनी पूर्व वासनाओं के अनुसार जड़तापूर्ण धारणाओं और क्रियाओं का ही आरोप करता है। इसलिए इस लीला के रहस्य को समझने में असमर्थ हो जाता है।

भगवान की तरह ही गोपियाँ भी रसमयी और सच्चिदानन्दमयी हैं। साधना से उन्होंने जड़ शरीर का ही त्याग कर दिया है। उनकी दृष्टि में केवल श्रीकृष्ण हैं, उनके हृदय में श्रीकृष्ण को प्रसन्न करने वाला स्नेह है। ब्रह्मा, शंकर, उद्धव और अर्जुन ने गोपियों की उपासना करके भगवान के चरणों में वैसे प्रेम का वरदान पाया है। उन गोपियों के दिव्य भाव को साधारण स्त्री-पुरुष के भाव जैसा मानना गोपियों के प्रति अन्याय और अपराध है। इस अपराध से बचने के लिए भगवान की दिव्य लीला पर विचार करते समय उनकी दिव्यता को याद रखना आवश्यक है। भगवान अजन्मा और अविनाशी हैं। वे नित्य सनातन शुद्ध भगवत स्वरूप ही है। गोपियाँ दिव्य जगत से भगवान की अनन्त अंतरंग शक्तियाँ हैं। इन दोनों का सम्बन्ध भी दिव्यतम है। यह उच्चतम भाव स्थूल शरीर और स्थूल मन से परे है। वस्त्रहरण करके जब भगवान स्वीकृति देते हैं, तब इसमें प्रवेश होता है। ❐

शरद पूर्णिमा से जुड़े रहस्य हैं

1. शरद पूर्णिमा को रास पूर्णिमा भी कहते हैं।
2. शरद पूर्णिमा को कोजागरी पूर्णिमा के नाम से भी जाना जाता है।
3. शरद पूर्णिमा के दिन चंद्रमा पृथ्वी के सबसे निकट होता है।
4. शरद पूर्णिमा की रात को चंद्रमा की रोशनी से अमृत की बरसात होती है।
5. शरद पूर्णिमा के दिन चंद्रमा की रोशनी में खीर रखने से वह औषधीय गुणों से भर जाती है।
6. शरद पूर्णिमा के दिन चंद्रमा की रोशनी से मस्तिष्क को सकारात्मक ऊर्जा मिलती है।
7. शरद पूर्णिमा के दिन चंद्रमा की रोशनी से अन्न, जल, और वनस्पतियों को औषधीय गुण मिलते हैं।

सेवा भारती को मिले 95 कम्प्यूटर

महाराजा अग्रसेन प्रौद्योगिकी संस्थान ने डिजिटल साक्षरता संकल्प अभियान के अंतर्गत सेवा भारती दिल्ली को 95 कंप्यूटर भेंट में दिए हैं।

इस अवसर पर महाराजा अग्रसेन टेक्निकल एजुकेशन सोसाइटी के संस्थापक व मुख्य सलाहकार डॉ॰ नंद किशोर गर्ग ने कहा कि संस्था ने यह कदम समाज के गरीब, शोषित, वंचित पिछड़े वर्ग के छात्र-छात्राओं को नि:शुल्क डिजिटल कंप्यूटर शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से उठाया है। यह पहल न केवल छात्रों को डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देगी, बल्कि उन्हें अपने भविष्य को बेहतर बनाने के लिए आवश्यक तकनीकी शिक्षा में कौशल विकास प्रदान करेगी। शिक्षा और समाज के अन्य क्षेत्रों में सेवा भारती दिल्ली प्रांत एक बहुत अच्छा और नेक काम कर रही है इसलिए संस्थान ने उसके साथ मिलकर यह अभियान शुरू करने का कार्य किया है।

इस अवसर पर सेवा भारती दिल्ली प्रांत के संगठन मंत्री श्री शुकदेव जी ने बताया कि सेवा भारती, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा चालित एक प्रकल्प है। सेवा भारती द्वारा किए जाने वाले सेवा कार्यक्रम चार आयामों को ध्यान में रखकर चलाए जाते हैं जो हैं - शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वावलंबन और संस्कार।

यह एक गैर-सरकारी संगठन है जो कि भारतीय समाज के आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों में सामाजिक आर्थिक रूप से हाशिए वाले, जनजातीय और स्वदेशी समुदायों पर विशेष ध्यान केंद्रित करता है। यह हजारों केंद्रों के अपने देशव्यापी नेटवर्क के माध्यम से मुफ्त चिकित्सा सहायता, शिक्षा, साथ हीं स्वाबलंबन के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण जैसे कई कल्याणकारी और सामाजिक सेवा कार्यक्रमों को शुरू करके शहरी झोपड़पट्टियों और पुनर्वास कॉलोनियों के बीच भी काम करता है। यह सैंकड़ों जिलों में साल भर लाखों गतिविधियों को चलाता है। आपदा (बाढ़, भुकम्प, आदि) के समय बढ़-चढ़कर समाज के हर हिस्से में सहायता के लिए बिना भेद-भाव तत्पर रहती है। आज संघ द्वारा रोपा गया यह पौधा स्वयं एक वट वृक्ष की भान्ति विकसित हो गया है और समाज के वञ्चित और निर्बल वर्ग के लिए विभिन्न क्षेत्रों में कार्य कर रहा है। उन्होनें समाज के गरीब, शोषित, वंचित पिछड़े वर्ग के छात्र-छात्राओं को नि:शुल्क डिजिटल कंप्यूटर शिक्षा प्रदान करने के संकल्प और इसके लिए महाराजा अग्रसेन टेक्निकल एजुकेशन सोसाइटी महाराजा अग्रसेन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी व डॉ. नंद किशोर गर्ग व अन्य पदाधिकारियों के अथक प्रयासों की सराहना की।

इस अवसर पर श्री हेमंत गुप्ता, श्री सुनील कुमार, श्री राजेश कुमार तथा सोसाइटी के श्री एस.पी. अग्रवाल, श्री आनंद गुप्ता, श्री रजनीश गुप्ता, श्री अविनाश गुप्ता, जी. वी. देसाई, महानिदेशक महाराजा अग्रसेन इंस्टिट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी, जयराम मनी त्रिपाठी व जनसंपर्क अधिकारी श्री राकेश चौरसिया, श्री जितेंद्र टेवतिया आदि उपस्थित रहे। ❐

किशोरी विकास प्रशिक्षण वर्ग संपन्न

गत 26 सितंबर को दिल्ली प्रांत कार्यालय 13 भाई वीर सिंह मार्ग में किशोरी विकास प्रशिक्षण वर्ग आयोजित आयोजित हुआ। सर्वप्रथम रंजू दीदी द्वारा हम भारत की नन्ही कलियां किशोरी गीत करवाया गया। इसके बाद प्रार्थना और गायत्री मंत्र किया गया तत्पश्चात पहला सत्र आरंभ हुआ।

पहला सत्र योग पर था। ममता झा जी द्वारा सरल योग व प्राणायाम सिखाया गया। उन्होंने यह भी बताया कि योग के हमारे शरीर और मस्तिष्क के लिए क्या फायदे हैं। तीन बार ओम के उच्चारण के बाद दूसरा सत्र शुरू हुआ। इस सत्र को प्रांत मंत्री संगीता दीदी द्वारा लिया गया। उन्होंने सेवा भारती का पूर्ण परिचय एवं कार्य विस्तार से बताए। मातृछाया, सेवाधाम, वजीराबाद छात्रावास, सोपान, चिकित्सा लैब, डायलिसिस लैब इन सब के बारे में शिक्षिकाओं को संपूर्ण जानकारी दी। दीदी ने कहा कि शोषित पीड़ित वंचित उपेक्षित लोगों की सेवा हमारा धर्म है। दीदी ने किशोरियों को समझाया कि पहले के समय पर संयुक्त परिवार हुआ करते थे जहां बेटियों को अच्छे संस्कार परिवार में दादा दादी चाचा मौसी सबसे मिलते थे, परंतु जैसे-जैसे परिवार छोटे होते गए लोगों के बीच दूरियां आई गई। माता-पिता भी वर्किंग होने की वजह से अपने बच्चों को ज्यादा समय नहीं दे पाते। इसलिए किशोरी अपने आसपास एक अच्छे दोस्त या मित्र की तलाश में कई बार भटक जाती हैं। इसमें हमें उनका विकल्प बनना है, उन्हें गाइड करना है, उनसे दोस्ती कर उनका सही मार्गदर्शन करना है। हमें उन्हें उपदेश नही देना अपितु मित्रता पूर्ण व्यवहार से उनकी समस्याओं को समझना और सुलझाना है। आज की स्वस्थ किशोरी कल जब स्वस्थ मां बनेगी तभी हमारा समाज स्वस्थ रहेगा।

तीसरा सत्र अंजू दीदी द्वारा लिया गया। उन्होंने सभी शिक्षिकाओं को पांच गटो में बांटा और सभी को अलग-अलग विषय दिए साथ ही उसका क्या सुझाव है उसके बारे उनसे प्रश्न किया। इसके फलस्वरुप हमें अनेक सुझाव मिले जिससे हम किशोरी विकास और अच्छे से चला सकते हैं।

चौथा सत्र प्रांत संगठन मंत्री सुनील जी ने लिया। उन्होंने शिक्षिकाओं को विभिन्न प्रकार के खेल सिखाएं ताकि वे अपनी साप्ताहिक कक्षा में अनेक प्रकार के खेल करवाकर किशोरियों का मानसिक, बौद्धिक वा शारीरिक विकास कर सकें। इन खेलों में जैसे जय भवानी जय शिवाजी, आंख बंद करके रुमाल को उठाना, फल फूल सब्जी, शहरों के नाम, राजा राम रावण इत्यादि। ❐

– शकुंतला

उत्कर्ष

दिनांक 22 सितंबर 2024 को सेवा भारती के जीबी रोड स्थित प्रकल्प उत्कर्ष के लिए विशेष दिन रहा है। हर रविवार की तरह आज भी उत्कर्ष केंद्र पर जनरल ओपीडी लगा कर स्वास्थ्य जांच शिविर आयोजित हुआ। तथा उत्कर्ष केंद्र पर ट्यूशन के लिए आने वालों छात्रों की शिक्षा धन के अभाव में बाधित न हो इसलिए केंद्र पर नियमित आने वाले

छात्रों में से 4 मेधावी छात्रों की एक वर्ष की दसवीं की स्कूल फीस उनके स्कूल में सेवा भारती उत्कर्ष की ओर से जमा किया गया एवं उच्च शिक्षा की इच्छा रखने वाले केंद्र के माध्यम से इसी वर्ष 12वी की परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले 4 निर्धन छात्रों की प्रथम वर्ष की कॉलेज फीस चेक के माध्यम से उनको दिया गया। उत्कर्ष अपने सामर्थ्य और क्षमता के अनुसार हर निर्धन बच्चे की शिक्षा के लिए प्रतिबद्ध है।

– **सविता नारंग, वंदना वत्स,** सेवा भारती

दक्षिणी विभाग में मेधावी विद्यार्थियों का सम्मान

सेवा भारती दक्षिणी विभाग ने हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी गत 8 सितम्बर को 'मेधावी विद्यार्थी सम्मान समारोह' का आयोजन किया। देशबंधु महाविद्यालय के सभागार में हुए इस कार्यक्रम में दक्षिण दिल्ली स्थित विभिन्न सेवा बस्तियों, कैंपों और अभावग्रस्त बस्तियों के 10वीं और 12वीं के उन मेधावी विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया, जिन्होंने वर्ष 2023-2024 के सत्र में कम से कम 65 प्रतिशत अंक प्राप्त किए थे। ये सभी ऐसे विद्यार्थी थे, जिन्होंने प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अपने मनोबल को कम नहीं होने दिया और पूरी लगन व मेहनत के साथ अपनी पढ़ाई पर ध्यान दिया तथा अच्छे अंकों से परीक्षा उत्तीर्ण की। ऐसे सभी पूर्व नामांकित छात्रों को सेवा भारती द्वारा स्कूल बैग, पदक और प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का प्रारम्भ अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन और गायत्री मंत्र के साथ हुआ।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि और दिल्ली विश्वविद्यालय के डीन प्रो. बलराम पाणी जी (माननीय विभाग संघचालक-पश्चिमी विभाग,राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ) ने शिक्षा, चरित्र और व्यवहार का महत्व बताते हुए उसे जीवन में उपयोगी बनाने पर बल दिया। आमंत्रित अतिथि के रूप मे देशबंधु महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. राजेन्द्र पांडे जी (सहप्रांत प्राध्यापक कार्यप्रमुख, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ) ने विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में सतत् प्रयास कर आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। सम्मानित अतिथि सुप्रसिद्ध समाजसेवी, व्यवसायी और सेवा भारती दिल्ली प्रांत के अध्यक्ष श्री रमेश अग्रवाल जी ने जीवन में कोई संकल्प लेकर, उस पर अडिग रह कर आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया। सेवा भारती के संदर्भ में वक्ता के नाते प्रान्त किशोरी विकास प्रमुख सुश्री अंजू पाण्डे जी ने सेवा भारती के विविध आयामों की जानकारी दी और सेवा भारती से जुड़ने का आह्वान किया। कार्यकर्ताओं का उत्साह बढ़ाने के लिए प्रांत सहसंगठन मंत्री श्री सुनील जी, प्रांत प्रतिनिधि के नाते प्रांत मंत्री श्री निर्भय शंकर जी, कार्यकारिणी सदस्य श्री इंद्रनील जी, प्रांत कार्यालय सचिव श्री प्रकाश जी शामिल रहे।

कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के दक्षिणी विभाग सेवा प्रमुख श्री अनिल जी (आचार्य देशबंधु महाविद्यालय) सहित प्रतिष्ठित नागरिकों और कुछ दानदाताओं को भी विशेष रूप से आमंत्रित किया गया। कार्यक्रम में तीनों जिलों के सभी कार्यकर्ता उपस्थित रहे। सेवा भारती के विभागाध्यक्ष डॉ अनंग पाल जी द्वारा कार्यक्रम की अध्यक्षता की गई। कार्यक्रम में आए प्रत्येक आगंतुक को 'एक्सिस बैंक' के सौजन्य से एक-एक मग, सेवा भारती और बैंक का लोगो और उसकी स्वयं की फोटो छाप कर भेंट की गई। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के गायन एवं कल्याण मंत्र के साथ हुआ। ❐

(सौजन्य : दक्षिणी विभाग प्रचार प्रमुख)

सेवाधाम दर्शन और सांस्कृतिक कार्यक्रम

■ **ओंकारनाथ मिश्र,** प्रबंधक, सेवा भारती सेवाधाम विद्या मंदिर

गत 22 सितम्बर को सेवा भारती सेवाधाम विद्या मंदिर आवासीय विद्यालय द्वारा सेवाधाम दर्शन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें 10:30 बजे आगमन, आगमन पर सभी अतिथियों का चंदन टीका लगा कर, पुष्प वर्षा, पटका पहनाकर एवं घोष से स्वागत किया गया। 10:30 से 11.30 तक जलपान की व्यवस्था रही। जलपान के पश्चात् अतिथियों को 12वीं कक्षा के भैया द्वारा सेवाधाम का दर्शन कराया गया। दर्शन के पश्चात् विद्यालय के सभागार में 11:30 बजे से 1:00 बजे तक सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए। इसका शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन व सरस्वती वन्दना से हुआ। मुख्य रूप से सेवा भारती के अध्यक्ष श्री रमेश अग्रवाल जी, सेवाधाम के अध्यक्ष श्री तरुण गुप्ता जी, द हंस फाउंडेशन के प्रोजेक्ट हेड श्री देवेश अहलूवालिया जी, विश्व हिंदू परिषद धर्म प्रसार समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री एस.पी.जालान जी, आईपी एक्सटेंशन के प्रमुख समाजसेवी श्री सुरेश बिंदल जी, आई. आर. एस. अधिकारी, कमिश्नर ऑफ इनकम टैक्स दिल्ली श्रीमती सुनीता वर्मा जी, अखिल भारतीय धर्मयात्रा महासंघ के कार्यकारी अध्यक्ष श्री प्रमोद अग्रवाल जी (तिरपाल उद्योग मालिक), श्री अमित गर्ग जी, श्रीमती रेखा गर्ग जी, डॉ निधि रस्तोगी जी, श्री संजय गर्ग जी (सेवा भारती प्रांत उपाध्यक्ष), श्री रविन्द्र कुमार शर्मा जी (पूर्व प्रबंधक सेवाधाम), स्थानीय टीला गांव के प्रमुख महानुभावों सहित 114 समाजसेवी बन्धु-भगिनियों की उपस्थिति रही। सांस्कृतिक कार्यक्रम में मुख्य रूप से सेवा धाम के बच्चों द्वारा विद्यालय की वीडियो क्लिप, पीपीटी, संस्कृत नृत्य, फैन ड्रिल, झारखंड नृत्य, पूर्वोत्तर राज्य का नृत्य, योगासन प्रस्तुत किया गया। राष्ट्रगान से कार्यक्रम का समापन हुआ।

कार्यक्रम के पश्चात् आए हुए सभी अतिथियों ने भोजन-प्रसाद ग्रहण किया। जाते समय सभी अतिथियों को तुलसी का पौधा, भेंट स्वरूप दिया गया। आने वाले समय में आप सभी देवतुल्य अतिथियों का आशीर्वाद सेवाधाम पर बना रहे, ऐसी हमारी अपेक्षा है। आप सभी का बहुत-बहुत आभार एवं धन्यवाद। ❐

पूर्वी विभाग के कार्यक्रम

सेवा भारती जिला गांधीनगर

11-12 सितंबर, 2024 को सेवा भारती, गांधीनगर जिले में प्रांत से सह संगठन मंत्री माननीय सुनील जी का प्रवास रहा। प्रात: 7 बजे बलदेव पार्क शाखा में जाना हुआ। गगन विहार में दानदाताओं से संपर्क रहा, साथ में जिला अध्यक्ष विजय जी रहे। उसके बाद जिले की निरीक्षिका के घर जाना हुआ और प्रात: जलपान रहा। इसके बाद सफेदा बस्ती गीता कॉलोनी में नए केन्द्र शहीद भगत सिंह केन्द्र का शुभारंभ माननीय सुनील जी के कर कमलों द्वारा हुआ। इसमें विभाग से स्वावलंबन प्रमुख पवन जी, सहमंत्री रुचि जी, जिले से कोषाध्यक्ष परमेश्वर जी, सह मंत्री हरेंद्र जी, बहन समिति मंत्री निर्मल जी, शिक्षिका एवं निरीक्षिका रहे। दोपहर का भोजन पवन जी के घर रहा। महिला समिति की बैठक चित्रा विहार केन्द्र पर रही।

वाणी से मिलेगी 'वाणी'

सेवा भारती दिल्ली प्रान्त ने स्वास्थ्य के क्षेत्र में 'वाणी' नाम से एक कदम उठाया है। इसके अंतर्गत मूक बधिर बच्चों के लिए कार्य होगा। बता दें कि 20-25 लाख रु. लगाकर ऐसे बच्चों का इलाज कराना माता-पिता के बस में नहीं होता। बच्चों में यह छुपी हुई विकलांगता एक सामान्य जीवन जैसे बन जाती है। जैसे बच्चा बड़ा होता है, उसका इलाज कर पाना संभव ही नहीं रहता। ऐसे वंचित उपेक्षित बच्चों को सुनने व बोल पाने की शक्ति मिलना उनके पूरे परिवार को नया जीवन दे सकती है। सेवा भारती ने मैक्स अस्पताल साकेत के E.N.T. विभाग ने अध्यक्ष डॉ. संयज सचदेव के नेतृत्व में स्थान-स्थान पर E.N.T. मेडिकल कैम्प ऐसे बच्चों की पहचान और नि:शुल्क सर्जरी की व्यवस्था की है।

कार्यकर्ताओं का प्रवास

16 सितंबर को जिला इंद्रप्रस्थ में श्री राम सेवा केंद्र पर स्वालंबन प्रमुख विभाग से पवनजी का प्रवास रहा। पवन जी का कंप्यूटर, मेहंदी, सौंदर्य और सिलाई की कक्षा में प्रवास रहा। कंप्यूटर की शिक्षिका से बातचीत की। गजराज जी से भी जानकारी ली की किस प्रकार वो नए छात्रों को सिखाते हैं, क्या-क्या आना चाहिए कि उनको एक्सपोर्ट कम्पनी में काम लग सके। पवनजी ने सलाह भी दी कि थोड़ा बदलाव व नवीनीकरण करके सभी प्रकल्पों को कैसे बेहतर करें कि ज्यादा से ज्यादा लोगों को लाभ मिले और वे स्वावलंबी हो सकें। उसके बाद सभी रविंद्र गोयल जी की प्रार्थना सभा में गए।

कार्यकर्ताओं का प्रवास

गत दिनों शाहदरा जिले में विभाग के राजेंद्र जी, सोलंकी जी का प्रवास रहा। विवेक विहार नगर के कृष्ण मार्केट बस्ती के केंद्र पर विभाग से सोलंकी जी, शाहदरा जिला से रीना जी आदि रहे। बालवाड़ी में 14 बच्चे थे। शिक्षिका निशु थी। सोलंकी जी ने बच्चों की पहले हाजिरी ली, उनके नाम पूछे फिर, उनसे पढ़ाई की भी जानकारी ली। बच्चों ने चित्रकला भी दिखाई। सोलंकी जी ने बच्चों को समझाया कि वे सवेरे उठकर अपने माता-पिता के पांव छूकर प्रणाम करें, पढ़ने आएं तब साफ-सुथरे कपड़े पहन कर आएं।

बच्चों को मिले उपहार

गत 16 सितंबर को प्रवास अंबेडकर सेवा केंद्र में इनर व्हील की बहनों ने संस्कार के बच्चों को स्टेशनरी तथा अन्य उपहार दिए। इसमें शाहदरा कार्यकारिणी की पूरी टीम उपस्थित रही।

चित्रकला प्रतियोगिता

शाहदरा जिले में पोषण सप्ताह के अन्तर्गत सभी केन्द्रों पर चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। सभी शिक्षिकाओं, सेवितजनों व कार्यकर्ताओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

'छात्र संरक्षक कार्यक्रम' का शुभारंभ

सेवा भारती द्वारा संचालित प्रकाशानन्द छात्रावास में 15 सितंबर को 'छात्र संरक्षक कार्यक्रम' का शुभारंभ हुआ। डॉक्टर निधि रस्तोगी जी के नेतृत्व में प्रतिष्ठित पेशेवरों एवं प्राध्यापकों द्वारा छात्रावास के सभी बच्चों को उनके स्थापित तक अपने-अपने संरक्षण में लिया गया। गुरुग्राम से आई चार्टर्ड अकाउंटेंट शुभी जी, तकनीकी विधा से श्रीमान सुशील शर्मा जी, श्रीमान पवन जी और दिल्ली विश्वविद्यालय के विभिन्न महाविद्यालयों से आए सहायक प्राध्यापकों (श्यामलाल कॉलेज से डॉ. कनिका, किरोड़ीमल कॉलेज से डॉ. प्रभात, लक्ष्मीबाई कॉलेज से डॉ. सुमित, शिवाजी कॉलेज से डॉ. प्रबुद्ध, भारती कॉलेज से डॉ. गोपाल, श्रीमती ललिता रतनू, श्रीमती लक्ष्मी) द्वारा विषयानुसार विद्यार्थियों को एक लंबे समय तक के लिए अपनी-अपनी जिम्मेदारी के पूर्ण निर्वहन का वचन दिया गया।

डॉ. निधि रस्तोगी जी की ममत्व प्रधानता की सुंदर छवि

ऐसी थी कि यहां के विद्यार्थी उन्हें माँ से संबोधित कर रहे थे। महोदया की दूरदृष्टि के कारण संभव है आज यहां आए सभी अपने-अपने संरक्षण में लिए विद्यार्थियों को हर प्रकार का सहयोग देकर राष्ट्र निर्माण में अपनी निष्ठा की वानगी प्रस्तुत करें।

-शैलेंद्र विक्रम, प्रांत मंत्री

तीसरा चिकित्सा शिविर

आज जिला इंद्रप्रस्थ में सुपोषित अभियान के अंतर्गत सेवा भारती और लेडिंग हार्डिंग कॉलेज के सहयोग से तीसरा चिकित्सा शिविर लगाया गया। इसमें बी पी, शुगर, हिमोग्लोबिन, आंख की जांच और अन्य कई जांचें की गईं और दवाइयां भी दी गईं, लाभार्थी 123 रहे। इंद्रप्रस्थ के सभी जिला कार्यकर्ता व शिक्षिका, निरीक्षिका रहे।

'ऋषि चरक चिकित्सा उपकरण सेवा केंद्र' का शुभारंभ

गत 14 सितंबर को 'ऋषि चरक चिकित्सा उपकरण सेवा केंद्र' का हवन के साथ विधिवत शुभारंभ किया गया। इस कार्यक्रम में यमुना विहार विभाग सेवा भारती की सभी शिक्षिका/निरीक्षिका और कार्यकारिणी के कार्यकर्ता उपस्थित रहे। सेवा भारती दिल्ली प्रांत से हरिओम जी (वैभव श्री संयोजक), और निर्भय शंकर जी (प्रांत मंत्री) तथा मुकेश जी (विभाग सेवा प्रमुख) की विशेष उपस्थिति रही। कार्यक्रम में संख्या 48 की रही। यह सेवा केंद्र सेवाधाम विद्या मंदिर सेवाधाम रोड मंडोली के निकट स्थित गोपालधाम छात्रावास के परिसर में प्रारंभ किया गया है। इस सेवा केंद्र में सभी प्रकार के चिकित्सा उपकरण उपलब्ध हैं जैसे-ऑक्सीजन सिलेंडर, व्हील चेयर, ऑक्सीजन कंसंट्रेटर इत्यादि। चिकित्सा उपकरणों का लाभ किसी भी बंधु को कुछ सुरक्षा राशि जमा करने के उपरांत नि:शुल्क प्राप्त हो सकेगा।

सुपोषित भारत पर संगोष्ठी

गत 26 सितंबर को हेडगेवार भवन, कैलाश नगर में सुपोषित भारत पर गोष्ठी आयोजित हुई। आंगनबाड़ी की कुसुम बहन जी ने बताया कि हमें अपने हाथों को कैसे धोना चाहिए। बच्चों को बाजार में मिलने वाली चीजों की आदत न डालें। भीगे काले चने, भुने चने, हरी साबुत दाल अंकुरित करके, गाजर, चुकंदर, दलिया खिचड़ी, आटे, सूजी से मेमोस बना कर दें। शिशु को टीका जरूर लगवाएं। 16 साल के बच्चे को कौन कौन से टिके लगवाना चाहिए। डेंगू, मलेरिया से रोकथाम के बारे में बताया। शिक्षिका, निरीक्षिका सेवितजन और बस्ती की महिलाएं उपस्थित रहीं।

सुपोषण और कुपोषण में अंतर

गत 28 सितम्बर को हेडगेवार केंद्र कैलाश नगर पर जाकिर हुसैन कॉलेज के 11 बच्चे और लक्ष्मीबाई कॉलेज के 3 बच्चों द्वारा सुपोषित भारत पर सेवित जनों के साथ मिलकर नुक्कड़ रहा जिसके द्वारा सुपोषण कुपोषण का अंतर समझाया गया आहारप्रणाली को समझाया गया। सेवित जनो के साथ तरह तरह के खेल रहे। केंद्र पर विभाग से रुचि बहन जी का प्रवास रहा और कॉलेज विद्यार्थियों के साथ विचारविमर्श रहा।

गोपालधाम छात्रावास में रात्रि प्रवास

गोपालधाम छात्रावास, राम मंदिर, रघुबीर नगर (पश्चिम विहार के समीप) में समाज सेवा तथा देश के निर्माण का एक अनूठा प्रकल्प है। सेवा बस्ती रात्रि प्रवास हेतु डॉ. संजय जिंदल (उपाध्यक्ष सेवा भारती दिल्ली प्रांत) को यह केंद्र निश्चित हुआ।

उनका रात्रि प्रवास 3-4 सितंबर तक रहा। यह एक स्मरणीय मार्मिक अनुभव रहा। यहां 14 बालक स्थाई निवास करते हैं, जो कि 1-5 कक्षा में विद्यालय जाते हैं। यहां दो सहायक भी निवास करते हैं। प्रात: 5.30 बजे से एक निश्चित समय सारिणी के साथ बालकों का दिन आरंभ होता है।

हर बालक की प्रतिभा देख कर यह निश्चित है कि यही भविष्य के वैज्ञानिक, डॉक्टर, कार्यकर्ता, अध्यापक आदि बनेंगे। दो सत्रों द्वारा प्रवास का समापन हुआ। ❐

BANSAL WIRE INDUSTRIES LTD.

BANSAL

Stainless Steel Wires - High/Medium Carbon Steel Wires
(Black and Galvonised)

Mfrs. : Low Carbon Steel Wires, Profile/Shaped Wires
(Black and Galvonised)

H.B. HHB & G.I. WIRES

Bansal Wire Industries Ltd.
F-3, Shastri Nagar, Delhi-110052 (India)
Tel. : +91-11-23648401, 23651890-91-92-93
Email : info@bansalwire.com, www.bansalwire.com

विज्ञापन के लिए आग्रह

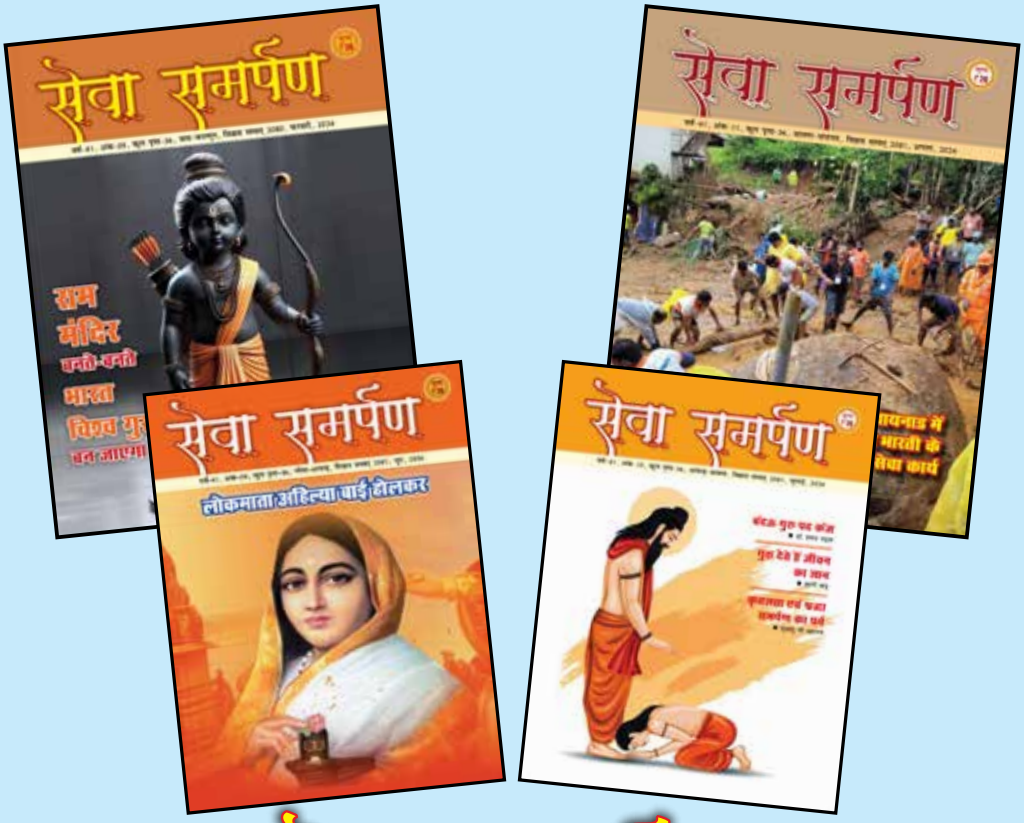

सेवा समर्पण

'सेवा समर्पण' पत्रिका समाज एवं संस्कृति के प्रति समर्पित, प्रतिष्ठित वर्ग, कार्यकर्ता एवं युवा वर्ग के बीच पिछले 41 वर्ष से 'नर सेवा-नारायण सेवा' के मूल मंत्र को लोकप्रिय बना रही है। इस पत्रिका द्वारा परिवार प्रबोधन, भारतीय जीवन शैली और संस्कारों से युक्त समसामयिक विषयों के साथ-साथ बच्चों, युवा वर्ग एवं महिलाओं संबंधी विषय सामग्री के द्वारा स्वावलम्बन, शिक्षा और संस्कारों को जन-जन तक पहुंचाने का विशेष कार्य हो रहा है। समय- समय पर किसी एक बिन्दु को केन्द्रित कर विशेषांक निकालने की योजना रहती है। आपसे प्रार्थना है कि अपने प्रतिष्ठान का विज्ञापन प्रकाशित कराएं और 50,000 पाठकों तक अपनी पहुंच बनाएं। यह पत्रिका सरकारी कार्यालयों, मंत्रालयों, पुस्तकालय, व्यापारी वर्ग, कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र, अन्य गैर-सरकारी संगठनों, अस्पताल इत्यादि स्थानों पर जाती है।

संपर्क करें-

सेवा भारती, 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001

फोन - 011-23345014-15

रजिस्टर्ड क्रमांक 40605/1983
तिथि 6-7 सितम्बर, 2024, प्रकाशन तिथि-5 सितम्बर, 2024
Posted at - LPC, DELHI RMS, DELHI-110006

डाक रजिस्टर्ड नं. U(C)-166/2022-24
DL(ND)-11/6188/2022-23-24
अग्रिम शुल्क के बिना प्रेषण

"AGARWAL PACKERS AND MOVERS LTD."

(नर सेवा - राष्ट्र सेवा)

APML

Nindra Daan Kendra for Truck Chaalak

(A Unique Concept to reduce Accidents on Roads by Trucks)

(ट्रक ड्राईवर देश का आंतरिक सिपाही है)

- 4,12,432 accidents happened yearly in India.
- Out of these accidents 1,53,972 lost their lives.
- Our Kendra saving 21 lives monthly on road to avoid sleep deprivation and stress.
- Empowering Drivers with respectful environment to provide them sound sleep with safe and secure parking space along with free barber, washroom facilities and all are free.

Pran Vayu Vahan

(कोविड के समय चल चिकित्सा)

- Modified trucks into "Oxygen Providers Van" during highest peak of COVID -II.
- Container converted into clinic within 24hrs.
- It is equipped with all facilities i.e. Oxygen cylinder, Beds, Oxygen Concentrator etc.
- Saved 543 Lives to provide Oxygen to highly vulnerable patients in association with Sewa Bharti.

Community Empowerment

(सामाजिक समरसता और अंत्योदय का जीवंत उदाहरण)

- Reducing inequalities to provide access to socially backward people to build temple of Sant Shiromani Kabir Ji Maharaj in Nalwa (Hisar) for their Spiritual well beings.
- Providing livelihood and skills to differently abled and financially backwards.
- Girl empowerment.
- Education to highly vulnerable children from villages and tribes.
- Adopted approach to reduce Carbon Emission to conserve environment.

09 300 300 300 www.agarwalpackers.com

मुद्रक/संपादक/प्रकाशक: डॉ.. शिवाली अग्रवाल द्वारा सेवा प्रकाशन न्यास के लिए 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित तथा शक्ति प्रिन्टर्स 1/3001, गली न.-16, रामनगर, मंडोली रोड, शाहदरा, दिल्ली-32, से मुद्रित।